भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 8 | अप्रैल 2007 | अंक 4

ज्ञान का उद्योग, उद्योग का ज्ञान

राष्ट्रीय ज्ञान आयोग देश में ज्ञान के विकास के लिए चिंतित है। ज्ञान के विकास के लिए 1500 नये विश्वविद्यालयों की आवश्यकता है जबकि आज केवल 350 विश्वविद्यालय हैं। भारत से प्रतिवर्ष लगभग सवा लाख छात्र विदेश में उच्च शिक्षा प्राप्त करने जाते हैं जिसमें 50 हजार करोड़ विदेशी मुद्रा व्यय होती है। इन विदेशी शिक्षा संस्थानों में शिक्षा प्राप्त कर सामान्यत: उन देशों में ही कार्य-व्यापार में लग जाते हैं। इस देश को उसका लाभ नहीं मिलता। भारत में इण्डियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट (आईआईएम) अहमदाबाद के छात्रों को विदेशी कम्पनी ने एक करोड़ ही नहीं, एक करोड़ 35 लाख (तीन लाख डालर) का पैकेज देने का प्रस्ताव किया है। इस प्रकार उद्योगपरक शिक्षा एक उत्पाद बन गई है जिसका निर्यात भारत से हो रहा है। अभी तक इस देश में उत्पादित वस्तुओं का निर्यात होता था। अब ज्ञान-उत्पाद का निर्यात हो रहा है। भारत से निर्यात हो रही प्रतिभा वहाँ जाकर उत्पाद बन जाती है, जिसका लाभ उस देश को मिलता है। कुछ ही छात्र इस प्रलोभन का त्याग कर पाते हैं जो भारत में निजी व्यवसाय करना चाहते हैं, या पारिवारिक कारणों से विदेश नहीं जाना चाहते।

आज स्थिति यह है कि सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योग तथा प्रारम्भिक से उच्च शिक्षा के संस्थान वह मानक नहीं प्रस्तुत कर पाते जिसकी अपेक्षा है। आज हमारे विश्वविद्यालय क्या इस प्रकार की शिक्षा दे पा रहे हैं जो निजी क्षेत्र के शिक्षण संस्थानों की तुलना कर सकें। नये विश्वविद्यालय खोलने की बात की जाती है। क्या उसके लिए अपेक्षित अध्यापक मिलेंगे? छात्र बहुसंख्यक मिल जायेंगे।

जिस प्रकार विदेशी संस्थान भारत में उद्योग लगाने आ रहे हैं उसी प्रकार विदेशी शिक्षा संस्थान भी 100 प्रतिशत विदेशी निवेश के साथ भारत में आने के लिए प्रयत्नशील हैं। इनमें शिक्षा के लिए भारी मूल्य चुकाना होगा। बैंक उद्योगों को उन्मुक्त भाव से ऋण दे रहे हैं। शिक्षा की गणना भी उद्योग के रूप में हो गई है, अत: छात्रों को बैंकों द्वारा ऋण देने की योजना है। भारत सरकार के आयकर विभाग ने भी इसमें सुविधा प्रदान करने की घोषणा की है। इस प्रकार ऋण लेकर ज्ञानी ज्ञान-उद्योग में उत्पन्न ज्ञान-उत्पाद को विदेश में निर्यात करने में ही अधिक सक्षम होंगे क्योंकि इस देश का ऐसा औद्योगिक विकास नहीं है जहाँ ऐसी व्ययशील शिक्षा प्राप्त कर उसका मूल्य प्राप्त किया जा सके।

आज निजी विद्यालय के सहारे ही देश में शिक्षा का विकास हो रहा है। राजकीय विद्यालयों का आकर्षण समाप्त हो चुका है। लोग भारी फीस देकर, जो 12 हजार से 48000 वार्षिक तक है। अपने बच्चों को मिशनरी या निजी नाम गिरामी स्कूलों में भेजते हैं। ज्ञानदायिनी शिक्षा संस्थान बड़े-बड़े उद्योगों की तरह समाचारपत्रों में बड़े-बड़े विज्ञापन प्रकाशित कराते हैं, मीडिया में प्रचार कराते हैं। ऐसा लगता है वे औद्योगिक उत्पाद का विज्ञापन कर रहे हैं। ज्ञान ऐसा महँगा उद्योग बन गया है क्योंकि सार्वजनिक क्षेत्र की ज्ञानदायिनी संस्थाएँ अपना आकर्षण खो चुकी हैं।

कोचिंग संस्थान एक उद्योग बन गये हैं। सामान्य शिक्षण संस्थानों में शिक्षा की

शेष पृष्ठ 4 पर

पुस्तकें

खोलती है ज्ञान का हर द्वार पुस्तकें
देती हमें ताकत यहाँ हर बार पुस्तकें
जब भी अकेले हम रहें तो साथ निभाए
करती है आदमी को सदा प्यार पुस्तकें
जो दृश्य आज है यहाँ वो कल न रहेगा
करती रहेंगी दृश्य को साकार पुस्तकें
पढ़ते रहो, बढ़ते रहो है जीत तुम्हारी
हर जंग के लिए करे तैयार पुस्तकें
यह चीज अनोखी बड़ी कमाल करे है
गढ़ती है आदमी का किरदार पुस्तकें
थोड़ा-सा वक्त चाहिए देकर तो देखिए
करती है बाअदब अरे मनुहार पुस्तकें
दुनिया की सैर कर लो आसान है बहुत
घर बैठे दिखा देती हैं संसार पुस्तकें
पैसे तो यहाँ एक दिन हो जाएँगे खतम
रह जाएँगी पंकज मगर उपहार पुस्तकें।

—गिरीश पंकज, रायपुर

किताबें करती हैं बातें बीते जमानों की
दुनिया के इंसानों की
आज की, कल की
एक-एक पल की
खुशियों की, गमों की, फूलों की, बमों की
जीत की, हार की, प्यार के मार की
क्या तुम सुनोगे इन किताबों की बातें
किताबें कुछ कहना चाहती हैं
तुम्हारे साथ रहना चाहती हैं।

—सफ़दर हाशमी

अनगिनत सीढ़ियाँ चढ़ने के बाद
एक किताब लिखी जाती है
अनगिनत सीढ़ियाँ उतरने के बाद
एक किताब समझी जाती है।

—नरेश अग्रवाल

मेरी दृष्टि में एक लेखक की साहित्यिक प्रतिष्ठा का मानदण्ड यही है कि उसकी कृति कितने पाठकों को आकर्षित करती है। **—ओलिवर गोल्डस्मिथ**

खिड़कियाँ खोलता हूँ तो...

—डॉ० बच्चन सिंह

ट्रांजिस्टर पर कमलेश्वर के न रहने का समाचार सुना। मैं आहत, स्तब्ध और चुप। थोड़ी देर में एक मित्र आ गये। वे भी मौन थे। मैंने अपनी चुप्पी तोड़ते हुए कहा—हिन्दी का सलमान रुश्दी कभी न लौटने के लिए चला गया। काश! 'मिडनाइट चिल्ड्रेन', 'शेम' के लेखक को 'कितने पाकिस्तान' पढ़ने को मिलता और वह पढ़ पाता तो उसे पता चलता कि देशी भाषाओं में 'मिडनाइट चिल्ड्रेन' से बेहतर लिखा जा रहा है।

विभाजन को लेकर लिखे गये हिन्दी उपन्यासों—'झूठा सच' और 'तमस' से बहुत आगे का यह उपन्यास 'कितने पाकिस्तान'। टाइमलेस त्रासदी। हिन्दी के सर्वोत्तम 7-8 उपन्यासों में एक। विभाजन को लेकर लिखे गये अब्दुल्ला हुसैन के उपन्यास 'उदास नसलें' से मैं जितना बेचैन हुआ था, 'कितने पाकिस्तान' पढ़ने के बाद उससे कम बेचैन नहीं हुआ। वे जितने बड़े उपन्यासकार थे उससे बड़े इन्सान थे—'सारिका' के सम्पादक। मैं एक दिन मुम्बई पहुँचा और उनका मेहमान हो गया। कमलेश्वर को जो मकान मिला था वह मरीन ड्राइव और नारीमन प्वाइंट के पास था। वहाँ पर घूमने का आनन्द ही कुछ और है। यों अधिकांश लोग चौपाटी जाते थे। कुछ जुहू। जुहू हुसैन का अड्डा था। वहाँ माधुरी दीक्षित रहती थीं। दो-तीन बार चौपाटी भी देखा था। चौपाटी के दृश्य पर एक मशहूर गाना ही बन गया है—'भेलपुरी खा रहा था/लड़की घुमा रहा था।' चौपाटी के बालू पर वास्तविक कोणार्क और खजुराहो उत्कीर्ण थे। कोणार्क, खजुराहो कलात्मक कृतियाँ और चौपाटी के बालू पर उत्तर आधुनिकवादी नंगा और फूहड़ यथार्थ। मेरे पहुँचने पर कमलेश्वर दफ्तर नहीं गये।

गप्पें याद नहीं हैं। शाम होते ही मरीन ड्राइव का समुद्र तट याद आया। कमलेश्वर में एक अदद शरारती तत्त्व भी था। उन्होंने कहा—थोड़ी दवा ले लीजिये, मरीन ड्राइव और अच्छा लगेगा। दवा ली और दस मिनट में मरीन तट पर जा पहुँचा। शान्त, बँधा हुआ समुद्र। चेन्नई, रामेश्वरम्, गोवा और कन्याकुमारी के समुद्र के उत्ताल तरंगाघातों का एकान्त अभाव। फिर भी शान्त समुद्र की लिलीपुटन, लहरियाँ, नयन-सुभग थीं, नयनोत्सव थीं। रातभर सपना देखता रहा। दूसरे दिन कमलेश्वर दफ्तर गये। लेकिन जल्दी ही लौट आये। मुंडेरे पर भूरे रंग की खरगोश के रोएँ की तरह बिछी धूप कह रही थी कि मरीन ड्राइव पर बहलाव का समय हो गया है। धूप की आवाज सुनी नहीं कि कमलेश्वर दवा लेकर हाजिर। मैं अज्ञानी मनुष्य बोला—थोड़ी दवा और दे दो। घूमने में अच्छा लगता है। कमलेश्वर ताड़ गये कि यह गँवार बनारसी पण्डित है। मुझे समझाने लगे कि दवा मात्रा भर ही लेनी चाहिए। फिर भी थोड़ी दे दी। मैं समुद्र के किनारे के डैम पर, समुद्र में पाँव लटकाकर बैठ गया। कमलेश्वर नहीं बैठे। वे मुझे देख रहे थे, मैं समुद्र को। बनारसी चाल से धीरे-धीरे ज्वार उठने लगा था। पूनम का चाँद समुद्र से छेड़छाड़ कर रहा था और देहभाषा में कुछ इशारा कर रहा था। कमलेश्वर ने झटके से मुझे डैम से नीचे उतार लिया और बोले—कह रहा था कि मात्रा से अधिक दवा नहीं लेनी चाहिए। बहुत दिनों के बाद मुझे मालूम पड़ा कि सोमास्वाद के वे मेरे प्रथम दीक्षा-गुरू थे।

चार साल पहले की बात है। मैं दिल्ली गया हुआ था, ठहरा था अपने छोटे बेटे राजीव के साथ कतवरिया सराय में। घर अच्छा था पर दूसरी मंजिल पर था। मुझे तो सीढ़ियाँ चढ़ने में कठिनाई होती थी। मैंने कमलेश्वर को घर आने का निमंत्रण दिया। वहाँ से सूरजकुण्ड (उनका निवास) कुछ दूर पड़ता है। वे आये और खटाखट सीढ़ियाँ चढ़ गये। उसी समय केदारनाथ सिंह भी आ गये। खाते-पीते कुछ काम की कुछ बेदाम की बातें होती रहीं। जाते समय अपने झोले से 'कितने पाकिस्तान' की एक प्रति निकाली। उसे मेरे हाथ में देते हुए सीढ़ियाँ उतर गये। उनके जाने के बाद उनकी इबारत पढ़ी—भाई, डॉ० बच्चन सिंह को आजादी के बाद से अब तक संकुल समय, प्रश्नाकुल विचार और सृजनधर्मी रचनात्मकता की बहुरंगी स्मृतियों के साथ... 29.06.2003। वास्तव में संकुल समय, प्रश्नाकुल विचार और सृजनधर्मी रचनात्मकता की बहुरंगी स्मृतियों का ही दूसरा नाम 'कितने पाकिस्तान' हैं।

दो हजार पाँच में मैं फिर दिल्ली जा पहुँचा। कमलेश्वर की बाइपास सर्जरी हो चुकी थी। उन्हें देखने सूरजकुण्ड गया। शरीर पर सर्जरी का असर था, मन पर नहीं था, कह नहीं सकता। हँसमुख चेहरा, जलद-मंद्र-रव असर को नवम्बर की पहाड़ी धूप की तरह घेरे हुए थे। उन्होंने मेरे स्वास्थ्य के बारे में पूछा। मैंने ईशा का शेर टरका दिया—'बहुत आगे गये, हम तैयार बैठे हैं।' फिर रवि बाबू का रटा हुआ छन्द फूट पड़ा, 'जाबार समय हलो विहंगोर'। कमलेश्वर ने हँसते हुए कहा—मैं तो वहीं से लौट रहा हूँ। वहाँ जगह नहीं है। लेकिन वे चुपके से चले गये। कहाँ गये? शायद 'कितने पाकिस्तान' के गिलगमेश की तरह मृत्यु की दवा खोजने।

'कितने पाकिस्तान' अपने आप में मृत्यु की दवा खोजने की प्रविधि है। यह दवा नहीं है। प्रविधि ही दवा है जो निरन्तर चलती रहती है, जीवन चलता रहता है। विद्या और अदीब की प्रेम कहानी की सीडी में पूरा उपन्यास कसा हुआ है। फतेहपुर जाने वाली गाड़ी से विद्या ने रूमाल गिरा दिया। किन्तु अदीब की मैनपुरी वाली गाड़ी खिसक रही थी। वह न गाड़ी छोड़ सकता था और न रूमाल उठा सकता था। आज के द्वन्द्वात्मक जीवन और युग का जीवन्त मेटाफर। उपन्यास के पाठक को भी रूमाल गिरता हुआ दीख पड़ता है लेकिन उठा नहीं पाता।

उपन्यास के आरम्भ में गालिब के तीन शेर उद्धृत हैं। उपन्यास के प्रसंग में उनके अर्थापन (इण्टरप्रेटेशन) बदल जाते हैं। एक मशहूर शेर है—

वफ़ा कैसी कहाँ का इश्क जब सर फोड़ना ठहरा
तो फिर ऐ संगेदिल तेरा ही आस्तां क्यों हो।

जब सिर फोड़ना ही है तो वफादारी कैसी और प्रेम कैसा? इन दोनों का ख्याल क्यों किया जाय? सिर फोड़ने के लिए तुमहारी ड्योढ़ी का पत्थर क्यों हो? दुनिया में बहुत पत्थर मिलेंगे। विभाजन की शिकार विद्या पाकिस्तानी मोहतरमां हो जाती है, उसे एक संगे-आस्तां मिल जाता है। एक अँगूठी से जिस तरह कभी बंगाल के मलमल का थान निकल जाता था उसी तरह एक शेर से पूरा उपन्यास निकल जाता है।

स्पेस-टाइम-कान्टीन्यूम के सहारे पुरातन काल से लेकर देश विभाजन के समय तक के चुनिन्दा आख्यानों से उपन्यास भरा पड़ा है। कमलेश्वर ने सूचना-क्रान्ति (इन्फार्मेशन-टेक्नालॉजी) का भरपूर उपयोग किया है। क्या नहीं है इसमें—कृष्ण, महाभारत, हिटलर, मुसोलनी, हिरोशिमा, नागासाकी, पोखरन, सेगाई, गाँधी, जिन्ना, नेहरू, माउण्टबेटन, मृदुला साराबाई, एडविना, क्वाण्टम, सापेक्षिकता-सिद्धान्त, अणु-हाइड्रोजन बम वगैरह, वगैरह। इसमें दलित-विमर्श, स्त्री-विमर्श को कम नहीं लिया गया है—खासतौर से स्त्री-विमर्श को।

अन्ततः यह पाठक के मन में एक ज्वलन्त प्रश्न उठाता है—क्या गिलगमेश मृत्यु की दवा लेकर लौटेगा? क्या बोधि-वृक्ष उगेगा और उसे काटने वाला शशांक नहीं होगा? हम प्रतीक्षा करें। वेटिंग फार गोदो। सही बात तो यह है कि बोधिवृक्ष लगता रहेगा और किसी शशांक द्वारा कटता रहेगा। फिर लगेगा फिर कटेगा हमें इस प्रक्रिया में जीना पड़ेगा। बेहद डिस्टर्ब करने वाले उपन्यास के शुरू होने के पहले ही उद्धृत कविता आज का सही आख्यान है। इस बन्द कमरे में मेरी साँस घुटी जाती है।

खिड़कियाँ खोलता हूँ तो जहरीली हवा आती है।

राष्ट्रकवि सोहनलाल द्विवेदी की जन्मशती

—अच्युतानंद मिश्र

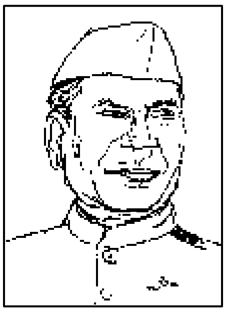

राष्ट्रकवि पण्डित सोहनलाल द्विवेदी का यह जन्मशती वर्ष है, कानपुर के पास बिन्दकी में सौ साल पहले उनका जन्म 22 फरवरी 1906 को हुआ था, लेकिन जन्मशती के बहाने ही सही, उनकी स्मृति जगाने का कोई केन्द्रीय आयोजन सरकारी या गैरसरकारी हिन्दी संस्थाओं द्वारा भी नहीं किया गया। सोहनलालजी के साथ जुड़ा राष्ट्रकवि का अलंकरण सरकारी कृपा नहीं, बल्कि 'भारतेन्दु' की तरह उनकी लोक स्वीकृति का प्रमाण है। मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', रामधारी सिंह दिनकर, रामवृक्ष बेनीपुरी या सोहनलाल द्विवेदी राष्ट्रीय नवजागरण के उत्प्रेरक ऐसे कवियों के नाम हैं, जिन्होंने अपने संकल्प और चिन्तन, त्याग और बलिदान के सहारे राष्ट्रीयता की अलख जगाकर, अपने पूरे युग को आन्दोलित किया था, गाँधीजी के पीछे देश की तरुणाई को खड़ा कर दिया था। सोहनलालजी उस शृंखला की महत्त्वपूर्ण कड़ी थे। डॉ० हरिवंशराय 'बच्चन' ने एक बार लिखा था 'जहाँ तक मेरी स्मृति है, जिस कवि को राष्ट्रकवि के नाम से सर्वप्रथम अभिहित किया गया, वे सोहनलाल द्विवेदी थे। गाँधीजी पर केन्द्रित उनका गीत 'युगावतार' या उनकी चर्चित कृति 'भैरवी' की पंक्ति 'वन्दना के इन स्वरों में एक स्वर मेरा मिला लो, हो जहाँ बलि शीश अगणित एक सिर मेरा मिला लो' जेलों में कैद स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों का सबसे अधिक प्रेरणा गीत था।

पण्डित सोहनलालजी, महात्मा गाँधी के अहिंसा दर्शन के लिए पूर्ण समर्पित थे, हिन्दी और राष्ट्रीयता का स्वाभिमान, खादी का सम्मान और देश के नन्हे नौनिहालों के लिए अटूट आशीर्वाद उनके जीवन का लक्ष्य बन गया था, उन्होंने अपनी साहित्य सेवा को राजनीतिक लाभ, सम्मान या व्यवसाय कभी बनने नहीं दिया, इसीलिए उनके कवि मानस को पूर्वग्रहहीन और जनोन्मुखी माना गया है। 2 अक्टूबर 1944 को, उन्होंने महात्मा गाँधी को उनके 77वें जन्मदिवस पर स्वयं सम्पादित गाँधी अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट किया था, जिसमें भारतीय भाषाओं में गाँधी पर लिखी गई सुन्दर रचनाओं का संकलन था, इस ग्रन्थ की भूमिका डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने लिखी थी। गाँधी पर वह पहला अभिनन्दन ग्रन्थ था। गाँधीजी ने 12 मार्च 1930 को अपने 76 सत्याग्रही कार्यकर्त्ताओं के साथ साबरमती आश्रम से 200 मील दूर दांडी मार्च किया था। भारत में पद यात्रा, जनसम्पर्क और जनजागरण की ऋषि परम्परा मानी जाती है। आज उस परिघटना की 45वीं जयन्ती देश में बड़े गौरव से मनाई जा रही है। उस यात्रा पर अंग्रेजी सत्ता को ललकारते हुए सोहनलालजी ने लिखा था—"या तो भारत होगा स्वतंत्र, कुछ दिवस, रात के प्रहरों पर या शव बन लहरेगा शरीर, मेरा समुद्र की लहरों पर, हे शहीद, उठने दे अपना फूलों भरा जनाजा आज दांडी मार्च के उत्सव में सोहनलालजी का जिक्र कहीं है? पण्डित बैजनाथ द्विवेदी उर्फ डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में सोहनलालजी के सहपाठी और मित्र थे। उन्होंने अपने मित्र पर एक लेख में लिखा था विश्वविद्यालय के विद्यार्थी समाज में उनकी कविताओं का बड़ा गहरा प्रभाव पड़ता था। उन्हें गुरुकुल महामना मदनमोहन मालवीय का आशीर्वाद प्राप्त था। अपने साथ स्वतंत्रता संग्राम में जूझने के लिए नवयुवकों की टोली बनाने में वे सदा सफल रहे। भाई सोहनलालजी ने ठोंक-पीटकर मुझे भी कवि बनाने की कोशिश की थी, छात्र कवियों की संस्था 'सुकवि समाज' के वे मंत्री थे और मैं संयुक्त मंत्री, बहुत जल्दी ही मुझे मालूम हो गया कि यह क्षेत्र मेरा नहीं है, फिर भी उनके प्रेरणादायक पत्र बराबर मिलते रहते थे, यह बात शायद वे भी नहीं जानते कि 'हिन्दी साहित्य की भूमिका' मैंने उन्हीं के उत्साहप्रद पत्रों के कारण लिखी थी।

उस दौर की राष्ट्रीय चेतना प्रधान रचनाओं का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा सोहनलालजी के खाते में है, सन् 1941 में देश प्रेम से लबरेज 'भैरवी' उनकी प्रथम प्रकाशित रचना थी। उनकी प्रवाहपूर्ण शैली में 'पूजागीत', 'युगाधार', 'विषपान', 'वासन्ती', 'चित्रा' जैसी अनेक काव्य कृतियाँ सामने आई थीं। उनकी बहुमुखी प्रतिभा तो उसी समय सामने आ गई थी। जब 1937 में लखनऊ से उन्होंने दैनिक पत्र 'अधिकार' का सम्पादन शुरू किया था। चार वर्ष बाद उन्होंने अवैतनिक सम्पादक के रूप में 'बालसखा' का सम्पादन भी किया था। देश में बाल साहित्य के वे महान आचार्य थे। उनके सहज और बाल सुलभ हृदय को, उनकी मृत्यु 1 मार्च 1988 तक, जिन्होंने देखा था, उनकी संख्या अगणित है। 'शिशुभारती', 'बच्चों के बापू', 'बिगुल', 'बाँसुरी और झरना', 'दूध बताशा' और दर्जनों रचनाएँ भी बच्चों को आकर्षित करती हैं। 1969 में भारत सरकार ने आपको पद्मश्री उपाधि प्रदान कर सम्मानित किया था।

Advanced Educational Psychology

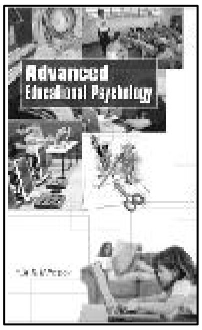

Dr. K.P. Pandey

Third Edition : 2007

ISBN : 81-7124-549-8

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN, VARANASI

Price :
Hardbound : 450.00
Paperback : 300.00

The present edition of Advanced Educational Psychology has been thoroughly updated, reviewed and enlarged in consonance with the fast developments of the corpus of psychological knowledge as evident from the new entris in the field of Educational psychology. The entire write up is designed in a modular form with an inbuilt arrangement for self assessment and feedback.

The book is divided into eighteen chapters which encompass the major fields of the discipline as at present. The orientation and scope of the material is centred on examining and evaluating the emerging concerns for objectives and goals of educational psychology, nature and implications of the psychology of development, theories of learning with an independent chapter devoted to cognitive theories and self-regulated learning, psychology of motivation, what research says to the teacher, psychology of personality with a foculs on various theories, nature and nurture of ability including the emotional intelligence, psychology of special groups of children—gifted, creative, backward, retarded, delinquent and physically challenged and the psychology of adjustment and mental health. The effort of the author is to capture and admbrate the latest empirical knowledge accessible through current psychological literature. The analysis of the various concepts has been attempted with illustrations galore which add to the clarity and communicativeness of the content presented through the various chapters of the book.

The book is intended to be used as a tool for ensuring mastery in educational psychology courses in the departments of teacher education and psychology of the Indian universities in particular.

पृष्ठ 1 का शेष

औपचारिकता पूरी की जाती है। कोचिंग संस्थान विषय के योग्य विद्वानों को भारी भरकम शुल्क या वेतन देकर नियुक्त करते हैं। राजस्थान का कोटा आज ऐसे संस्थानों का केन्द्र बन गया है। क्या महाविद्यालयों या विश्वविद्यालयों में ऐसी व्यवस्था सम्भव नहीं है?

कैसे सम्भव हो? महाविद्यालय और विश्वविद्यालय तो राजनेताओं के लिए राजनीतिक कार्यकर्ता तैयार करने के केन्द्र बन गये हैं। समाज और राष्ट्र को शिक्षा द्वारा समर्थ बनाने की जरूरत है जबकि वे इन नेताओं द्वारा निर्देशित होते हैं। पूरा वर्ष छात्र यूनियन के चुनाव में बीत जाता है। ये डिग्रीधारक बेरोजगार समाज के लिए समस्या बन जाते हैं।

निजी तथा सार्वजनिक क्षेत्र की शिक्षा-व्यवस्था में कितना अन्तर है। एक में औपचारिकता मात्र है, दूसरे में लक्ष्य है।

समाज और देश के विकास के लिए ज्ञान को उद्योग की तरह परिभाषित करना होगा तभी देश के विकास के लिए उद्योग के ज्ञानी मिलेंगे। यह ध्यान रखना होगा कि भौतिक विकास के लिए ज्ञान की पहली शर्त है आंतरिक विकास का ज्ञान, तभी वह ज्ञान सार्थक होगा। ज्ञान मनुष्य के व्यक्तित्व को सचेतन, सजीव, ऊर्जावान तथा संवेदनशील बनाने के लिए है न कि उद्योगजनक उत्पाद। देश के सजीव एवं शाश्वत विकास को दृष्टि में रखकर ज्ञान की संवेदनायुक्त शक्ति को पहचानिए। **—पुरुषोत्तमदास मोदी**

पुस्तकालयों, शिक्षा संस्थाओं

के लिए

साहित्यिक तथा विभिन्न विषयों की हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत पुस्तकों का विशाल संग्रह

तीन हजार वर्ग फुट में विशाल शोरूम

विश्वविद्यालय प्रकाशन

विशालाक्षी भवन, चौक

(चौक पुलिस स्टेशन परिसर के पार्श्व में)

वाराणसी – 221 001 (उ०प्र०)

Phone & Fax : (0542) 2413741, 2413082

E-mail: sales@vvpbooks.com

जन्मशताब्दी वर्ष

आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र

—डॉ० देवव्रत जोशी

शताब्दी वर्ष मनाये जा रहे हैं मूर्द्धन्य साहित्यकारों के। ऐसे ही विराट साहित्यिक व्यक्तित्व का यह जन्मशताब्दी वर्ष है : आचार्य विश्वनाथप्रसाद मिश्र का।

पं० मिश्र आचार्य नरेन्द्रदेवजी के कुलपतित्व वाले बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में हिन्दी के प्रोफेसर थे, रीतिकाल के सर्वमान्य विद्वान। बातचीत में दो टूक। मैं पहली बार उनसे वि०वि० उज्जैन में उनके निवास पर मिला। प्रणाम किया। 'क्या बायें हाथ से प्रणाम किया जाता है?' उन्होंने लगभग घुड़की लगाई। इसके पूर्व मैंने पाँच मिनट बाहर प्रतीक्षा की थी। द्वार पर तख्ती लगी थी—'हैं/बैठिये।, नहीं हैं/जाइये'।

रीतिकाल का विद्वान तो सौम्य, सरल, ममता-भरे हृदय वाला होगा लेकिन यहाँ तो रूखापन ही नजर आ रहा था।

'क्यों आए? क्या पी-एच०डी० वगैरह करनी है?' रूखे स्वर में पूछा। उत्तर दूँ, इसके पूर्व ही—''चले आते हैं जाने कहाँ-कहाँ से....पहले अज्ञेय की एक कविता की व्याख्या तो करके लाये कोई?''

''मैं पी-एच०डी० के लिए नहीं आया। वैसे ही आपके जीवन के सम्बन्ध में कुछ जानने की जिज्ञासा लेकर आया हूँ।'' मैंने कहा।

''तो जानो मुझे, मेरे जीवन को!... मैं चन्द्रशेखर आजाद का सक्रिय साथी बना रहा बनारस में। उफ़ किया कि बाहर... खैर, छोड़ो। लेकिन यह जरूर लिख लो कि मैं बहुत कड़े दिल का आदमी हूँ। रोया जीवन में सिर्फ एक बार। जब आजाद शहीद हुआ। अपने बेटे चन्द्रशेखर की मौत पर भी आँसू नहीं निकले।'' आचार्य का नया रूप मेरे सामने था। मैं हर्षित और हतप्रभ एक साथ।

हैरत तो यह थी कि रीतिकाल के कपाटों में कैद समझा जाने वाला हिन्दी का रस-मर्मज्ञ आलोचक तो क्रान्तिकारी निकला।

मिश्रजी अब रौ में थे। दो-एक धाँसू संस्मरण सुनाते हैं। ''कल ही पीएससी मध्यप्रदेश से प्राध्यापकों का इण्टरव्यू लेकर लौटा। पाँच दिन रहा इन्दौर में। शैक्षणिक स्तर निरन्तर गिर रहा है। लिस्ट आई फाइनल। बनाई गई थी पीएससी चेयरमैन द्वारा। उन्होंने कहा—'हस्ताक्षर कर दीजिये...' मैंने पूछा—'एक्सपर्ट तो मैं था। लिस्ट फाइनल मुझे बनानी है...और आपकी योग्यता क्या है?' चेयरमैन बोले—'एम०काम०, एल-एल०बी०, आईएएस।' इसमें हिन्दी कहाँ? ....मैंने पूछा। देवव्रत! मैंने हस्ताक्षर नहीं किये, लौट आया।''

ऐसा ही लोमहर्षक (सच्चा) 'किस्सा' उन्होंने और सुनाया। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, केशवप्रसाद मिश्र, लाला भगवानदीन, अयोध्या सिंह उपाध्याय और मैं बीएचयू में प्राध्यापक थे। केशवजी हेड थे। उनके निधनोपरान्त विभागाध्यक्ष का पद रिक्त हुआ। हजारीप्रसादजी शान्ति निकेतन से विभागाध्यक्ष के रूप में लाए गए। मुझे इण्टर का पीरियड दिया गया। मैंने इन्कार कर दिया। आचार्य नरेन्द्रदेव कुलपति थे। उन्होंने अपने निवास पर हिन्दी विभाग के प्राध्यापकों को भोजन पर बुलाया। मैं जरा ज्यादा ही गुस्से में था। ''मेरी तनख्वाह कम कर दीजिए। मैं इण्टर का पीरियड ले लूँगा।''

वस्तुत: हजारी बाबू प्रकाण्ड पण्डित थे और शान्तिनिकेतन में विभागाध्यक्ष थे। डिग्री थी ज्योतिषाचार्य की। उन्हें बी०ए० तक पढ़ाने का अनुभव था। बीएचयू के सीनियर प्रोफेसरों की हेड बनने की खींचतान में हजारी बाबू लाए गए थे। अन्त में तो आचार्य मिश्र और आचार्य द्विवेदी में खूब छनने लगी थी। किन्तु सिद्धान्तों के कट्टर थे विश्वनाथप्रसादजी।

''देखो, हमें मगध यूनिवर्सिटी का वीसी बना रहे थे। हम ठहरे अध्यापक। यहाँ वीसी 'सुमन' ने यह ऑफर दिया, चले आए। अध्येता को कुलपति बनाने का मतलब?''

वे खुले तो खुलते ही चले गए थे। अपने हाथ से चाय बनाकर पिलाई। 'तुम बेगरज मोहब्बत वाले हो।' ऐसों से मिलना मुझे अच्छा लगता है, वरना तो यहाँ अपनी गोटियाँ ही बिठाने ही लोग आते हैं। मिश्रजी बोले।

'देश की वर्तमान दुरवस्था पर कुछ कहेंगे?' मेरा अन्तिम प्रश्न था।

''कौन-सा देश? किसका देश? कौन नेता, कौन नागरिक? सर्वत्र अराजकता है...ज्यादा न कहलवाओ।'' हताश स्वर में, विवर्ण मुख लिये।

कहते हैं हजारीप्रसाद द्विवेदी और विश्वनाथप्रसादजी में वैमनस्य था किन्तु वह दृश्य मुझे आज भी नहीं भूलता। अवसर था, डॉ० श्रीकृष्णलाल की कन्या के विवाह का। हम सभी एकत्र थे। हजारीप्रसादजी भी थे। तभी रिक्शे पर विश्वनाथप्रसादजी आये, हजारीप्रसादजी ने उन्हें बाँहों में भर लिया। दृश्य अद्भुत था। विश्वनाथजी गद्‌गद् हो उठे।

—पुरुषोत्तमदास मोदी

सम्मान-पुरस्कार

रहमान राही को ज्ञानपीठ पुरस्कार

कश्मीर के सुप्रसिद्ध कवि व आलोचक **रहमान राही** को 40वाँ ज्ञानपीठ पुरस्कार देने की घोषणा की गई है।

ज्ञानपीठ पुरस्कार चयन समिति के संयोजक रवींद्र कालिया ने बताया कि डॉ० लक्ष्मीमल सिंघवी की अध्यक्षता में गठित चयन समिति ने राही को भारतीय भाषा में महत्त्वपूर्ण योगदान के लिए 2004-05 का प्रतिष्ठित ज्ञानपीठ पुरस्कार देने का निर्णय लिया है। छह मई, 1925 को जन्मे राही कश्मीर के पहले लेखक हैं, जिन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार दिया जा रहा है।

पुरस्कार में पाँच लाख रुपये की राशि, एक प्रशस्ति-पत्र और वाग्देवी की प्रतिमा शामिल है। इससे पहले, रहमान को 1961 में साहित्य अकादमी पुरस्कार मिल चुका है। साथ ही, उन्हें पदमश्री सम्मान भी दिया जा चुका है। इसके अतिरिक्त जे०एण्ड के कल्चरल एकेडमी अवार्ड (1980) और मानव संसाधन विकास मंत्रालय की फैलोशिप (1989) से भी उन्हें सम्मानित किया जा चुका है।

पहली बार किसी कश्मीरी को मिला यह सम्मान कश्मीर की उस महान साहित्यिक परम्परा का सम्मान है जिसने संस्कृत, फारसी और उर्दू तथा हिन्दी के साथ-साथ कश्मीरी में विश्वविख्यात साहित्यिक विभूतियों को जन्म दिया। इनमें अभिनव गुप्त, कल्हण (संस्कृत), गनी कश्मीरी, मुंशी भवानीदास काचरू (फारसी), ब्रजनारायण 'चकबस्ते', डॉ० इकबाल, रतननाथ दर 'सरशार' (उर्दू), चन्द्रकांता (हिन्दी) आदि अग्रणी हैं। कश्मीरी में आदि कवयित्री लल्लद्यद, महजूर, मास्टरजी आजाद और दीनानाथ नादिम की तरह ही रहमान राही भी कश्मीरी साहित्य में सूर्य के समान चमक रहे हैं।

एक निम्न मध्यवर्गीय परिवार में, 1925 में जन्मे राही ने पत्रकार और अध्यापक के रूप में अपना कैरियर आरम्भ किया। वह प्राध्यापक रहने के बाद कश्मीर विश्वविद्यालय में कश्मीरी विभाग के संस्थापक अध्यक्ष बने। इस प्रकार स्नातकोत्तर स्तर पर कश्मीरी भाषा और साहित्य के अध्ययन-अध्यापन तथा शोध की दिशा में अपनी मातृभाषा को यथोचित स्थान दिलाने में रहमान राही का योगदान अभिनन्दनीय है।

किरण देसाई को नेशनल बुक पुरस्कार

भारतीय मूल की उपन्यासकार **किरण देसाई** के बहुचर्चित उपन्यास 'द इनहेरिटेंस ऑफ लॉस' को नेशनल बुक क्रिटिक्स सर्कल फिक्शन पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। इससे पहले देसाई को इस उपन्यास के लिए मैन बुकर पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। यह पुस्तक किरियामा पुरस्कार की दौड़ में भी शामिल है। इस पुरस्कार की होड़ में देसाई के साथ चिमामंदा नगोची अदिची अपनी पुस्तक 'हाफ ऑफ ए येलो सन', 'व्हाट इज व्हाट' के लिए डेव इगर्स, 'द ले ऑफ द लैंड' केलिए रिचर्ड फोर्ड और 'द रोड' के लिए कारमैक मैकार्थी शामिल थे। पुस्तक की समीक्षा करते हुए न्यूयार्क टाइम्स ने लिखा है कि यद्यपि यह कुछ कमजोर लोगों की नियति पर केन्द्रित है तथापि यह असाधारण उपन्यास समसामयिक अन्तरराष्ट्रीय मुद्दों तथा भूमण्डलीकरण, बहुसंस्कृतिवाद, आर्थिक विषमता, कट्टरपंथ और आतंकवादी हिंसा का चित्रण करता है। इस उपन्यास का कालखण्ड अस्सी के दशक का है, लेकिन अमेरिका पर 11 सितम्बर को हुए आतंकी हमले के बाद के सर्वश्रेष्ठ उपन्यासों में यह एक है।

डॉ० कपिलदेव द्विवेदी को वेदरत्न पुरस्कार

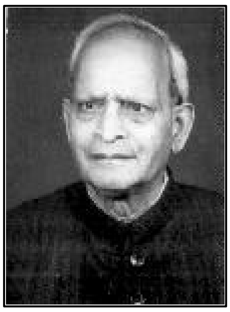

पद्मश्री डॉ० कपिलदेव द्विवेदी को वृन्दावन में आयोजित एक भव्य समारोह में भारतीय विद्या भवन, बंगलौर द्वारा गुरु गंगेश्वरानन्द वेदरत्न पुरस्कार से विभूषित किया गया। अलंकरण का कार्य प्रख्यात संत रमेशभाई ओझा ने किया। इस अवसर पर पाँच अन्य विद्वानों को भी श्री गुरु गंगेश्वरानन्द वेदरत्न सम्मान प्रदान किया गया।

श्रौतमुनि आश्रम, वृन्दावन में भव्य समारोह का आयोजन गुरु गंगेश्वरानन्द समिति द्वारा किया गया। इस समारोह के मुख्य अतिथि प्रख्यात संत रमेशभाई ओझा ने कहा कि वेद भारत की आत्मा है। आपने गुरु गंगेश्वरानन्द द्वारा किए गए वेद प्रचार का स्मरण करते हुए वेदों के प्रचार की आवश्यकता बताई। ब्रह्मलीन स्वामी गंगेश्वरानन्द की स्मृति में दिए जाने वाले गुरु गंगेश्वरानन्द वेदरत्न पुरस्कार से आपने वेद एवं संस्कृत की सेवा के लिए डॉ० कपिलदेव द्विवेदी को अलंकृत किया।

डॉ० कपिलदेव द्विवेदी ने वेदों का ज्ञान जन सामान्य तक पहुँचाने के लिए वेदामृतम् ग्रन्थमाला 37 भाग-अथर्ववेद का सांस्कृतिक अध्ययन, वेदों में विज्ञान, वेदों में आयुर्वेद, वेदों में राजनीतिशास्त्र, वेदों में समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र और शिक्षाशास्त्र, वैदिक दर्शन, वैदिक देवों का आध्यात्मिक और वैज्ञानिक स्वरूप, द एसेन्स ऑफ द वेदाज़, कल्चरल स्टडी ऑफ द अथर्ववेद आदि का प्रणयन किया है। भारत सरकार द्वारा डॉ० कपिलदेव द्विवेदी को 1991 में पद्मश्री से अलंकृत किया गया है। आपको उ०प्र० संस्कृत अकादमी, दिल्ली संस्कृत अकादमी तथा अनेक देशी और विदेशी विश्वविद्यालयों द्वारा अनेक सम्मान प्राप्त है। आपने वेद, संस्कृत और भारतीय संस्कृति के प्रचारार्थ अनेक बार 15 से अधिक देशों की यात्रा की है।

डॉ० कपिलदेव द्विवेदी के अतिरिक्त वेद एवं संस्कृत की सेवा के लिए डॉ० दामोदर झा (होशियारपुर), ऋग्वेद का पुरस्कार डॉ० एन०ए० अनन्त रंगाचार्य (बंगलूरु), यजुर्वेद का पुरस्कार पी०एस० अनन्त नारायण सोमायाजी (तिरुची), सामवेद का श्री शिवराम त्रिपाठी (वाराणसी) को (मरणोपरान्त) प्रदान किया गया।

बद्रीनारायण को केदार सम्मान

समकालीन हिन्दी कविता के महत्त्वपूर्ण कवि **श्री बद्रीनारायण** को उनके कविता-संकलन 'शब्द पदीयम' के लिए वर्ष 2006 का 'केदार सम्मान' देने का निर्णय किया गया है।

वर्ष 1965 में जन्मे श्री बद्रीनारायण का 'शब्द पदीयम' वर्ष 2004 में वाणी प्रकाशन द्वारा प्रकाशित दूसरा कविता-संकलन है। इनका पहला कविता संकलन 'सच सुने बहुत दिन हुए' 1992 में प्रकाशित हुआ था। श्री बद्रीनारायण वर्तमान में गोविन्दवल्लभ पन्त सामाजिक विज्ञान संस्थान, झूंसी, इलाहाबाद में कार्यरत हैं।

शाश्वतामृत सम्मान

श्री श्याम विद्यार्थी को श्रीधर शास्त्री, महामंत्री ने भारती-परिषद्, प्रयाग की ओर से शाश्वतामृत सम्मान प्रदान किया। श्री श्याम विद्यार्थी की कविताओं में आस्था के स्वर हैं, अस्मिता का उन्नयन है और सुकृति का सुवास है।

साहित्य अकादमी फेलो

साहित्य अकादमी ने अंग्रेजी कथा लेखिका अनीता देसाई, कोंकणी लेखक रवीन्द्र केलकर, पंजाबी लेखक कर्तार सिंह दुग्गल को फेलो (मानद सदस्य) मनोनीत किया है। इंग्लैण्ड में रह रहे अंग्रेजी लेखक एवं विद्वान् आर०ई० आशर को भी भारतीय भाषा तथा साहित्य में महत्त्वपूर्ण योगदान के लिए मानद सदस्य मनोनीत किया गया है। केरल साहित्य अकादमी ने श्री आशर को मलयालम भाषा तथा साहित्य में योगदान के लिए स्वर्णपदक प्रदान किया।

मसूरी में जन्मी अनीता देसाई को उनके उपन्यास 'फायर ऑन द माउन्टेन' पर साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हो चुका है, 1990 में उन्हें पद्मश्री से भी सम्मानित किया गया।

कर्तार सिंह दुग्गल को 1988 में पद्मभूषण प्रदान किया गया था। उनकी रचनाएँ भारतीय तथा विदेशी भाषाओं में अनूदित हो चुकी हैं।

श्री केलकर को उनकी यात्रा-पुस्तक 'हिमालयांत' पर साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ था।

पाकिस्तानी लेखक को प्रेमचंद स्मृति फैलोशिप

हिन्दी के महान कथाकार मुंशी प्रेमचंद की स्मृति में साहित्य अकादमी द्वारा स्थापित पहली फैलोशिप पाकिस्तान के प्रख्यात कथाकार **इंतजार हुसैन** को देने का निर्णय किया गया है। अकादमी ने मुंशी प्रेमचंद की 125वीं जयन्ती के मौके पर दक्षेस देशों के किसी लेखक को यह प्रतिष्ठित फलोशिप देने का फैसला किया था। फैलोशिप के अन्तर्गत श्री इंतजार हुसैन को भारत में एक से तीन महीने के लिए आमंत्रित किया जाएगा और वह देश के विभिन्न शहरों में रचना-पाठ करेंगे। सारा आतिथ्य अकादमी वहन करेगी। 21 दिसम्बर 1923 में बुलन्दशहर के डिबाई गाँव में जन्मे इंतजार हुसैन विभाजन के समय पाकिस्तान चले गये। उन्होंने उर्दू तथा अंग्रेजी में एम०ए० किया। उनके चार उपन्यास, दस कहानी-संग्रह छप चुके हैं।

वह लाहौर में रहते हैं और प्रसिद्ध अखबार 'डान' में स्तम्भ लिखते हैं। अकादमी की विज्ञप्ति के अनुसार डॉ० आनन्दकुमार स्वामी की स्मृति में फैलोशिप जापान के भारत-जापान-कला संस्थान में भाषा विज्ञान की निदेशक मामी यामदा को दिया गया है। 27 फरवरी 1960 को जन्मी यामदा की 30 पुस्तकें छप चुकी हैं। उन्हें एक से तीन महीने तक भारत में रहने के लिए आमंत्रित किया जाएगा और इस दौरान वह अपना व्याख्यान देंगे।

चित्रा मुद्गल को कल्पना चावला अवार्ड

व्यास सम्मान से सम्मानित चित्रा मुद्गल बनवारीलाल चावला से कल्पना चावला सम्मान 2007 प्राप्त करते हुए। केन्द्र में अमरजीत सिंह कोहली।

हिन्दी की यशस्वी साहित्यकार **चित्रा मुद्गल** को साहित्यिक योगदान हेतु अन्तरिक्ष यात्री कल्पना चावला की स्मृति में श्रद्धांजलिस्वरूप आयोजित समारोह में पंजाब इंजीनियरिंग कॉलेज, चण्डीगढ़ के पूर्व छात्रों ने सम्मानित और पुरस्कृत किया। चित्रा मुद्गल के साथ अन्य क्षेत्रों में शिखरस्थ महिलाओं को भी पुरस्कृत किया गया—फिल्म : नन्दितादास, चित्रकला : अर्पणा कौर, फिल्म पत्रकारिता : उमा वासुदेवन, नृत्य : सरोज वैद्यनाथन, लोकगायकी : शमीम आजाद, शूटिंग : शिल्पी सिंह।

अनिल त्रिपाठी को देवीशंकर अवस्थी सम्मान

हिन्दी आलोचना के लिए 2006 का 11वाँ 'देवीशंकर अवस्थी स्मृति सम्मान' युवा आलोचक **डॉ० अनिल त्रिपाठी** को दिया जाएगा। उन्हें यह सम्मान 2006 में प्रकाशित उनकी आलोचना पुस्तक 'नयी कविता और विजयदेव नारायण शाही' पर दिया जा रहा है। हिन्दी आलोचना के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रतिवर्ष यह सम्मान किसी युवा साहित्यकार को दिया जाता है।

मन्नू भण्डारी को शलाका सम्मान

'महाभोज' व 'आपका बंटी' की रचयिता **मन्नू भण्डारी** को हिन्दी भाषा व साहित्य क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए हिन्दी अकादमी का वर्ष 2006-07 का प्रतिष्ठित शलाका सम्मान दिया जाएगा। सम्मान स्वरूप उन्हें 1,11,111 रुपये नकद, शॉल, प्रशस्ति पत्र और प्रतीक चिह्न प्रदान किया जाएगा।

काका हाथरसी सम्मान से इस साल हास्य कवि महेन्द्र शर्मा को सम्मानित किया जाएगा। इसके अतिरिक्त 12 लेखकों को वर्ष 2006-07 के साहित्यिक कृति एवं 10 लेखकों को बाल एवं किशोर साहित्य सम्मान से नवाजा जाएगा। सभी पुरस्कार 29 मार्च को कमानी सभागार में प्रसिद्ध कथाकार कृष्णा सोबती के हाथों प्रदान किए जाएँगे।

लघु कथा पुरस्कार

लखनऊ विश्वविद्यालय संस्कृत विभाग के रीडर **डॉ० रामसुमेर यादव** को दिल्ली संस्कृत अकादमी ने अखिल भारतीय लघुकथा के प्रथम पुरस्कार से अलंकृत किया। पुरस्कार स्वरूप एक हजार मुद्राएँ, शॉल तथा प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया।

शम्सुर्रहमान को हरियाणा उर्दू एकेडमी सम्मान

सुप्रसिद्ध आलोचक **प्रोफेसर शम्सुर्रहमान फारूकी** को हरियाणा उर्दू एकेडमी द्वारा सम्मानित किया जाएगा। एकेडमी के सचिव कश्मीरीलाल 'साकिर' के अनुसार वर्ष 2006 का सबसे बड़ा यह सम्मान प्रोफेसर फारूकी को उनके उपन्यास 'कई चाँद थे सरे आसमां' के लिए दिया जाएगा। चंडीगढ़ में 28 अप्रैल को वार्षिक समारोह में उन्हें सम्मानित किया जाएगा। इसके अन्तर्गत शॉल और स्मृति चिह्न के अतिरिक्त उन्हें एक लाख रुपये नकद दिए जाएँगे। इससे पूर्व पश्चिम बंगाल उर्दू एकेडमी और दिल्ली उर्दू एकेडमी की ओर से उन्हें पहले भी सम्मानित किया जा चुका है।

उर्दू लेखक मजीद को जफर सम्मान

उर्दू साहित्यकार **इकबाल मजीद** को इस वर्ष के बहादुरशाह जफर सम्मान के लिए चुना गया है। वहीं 2006 के पं० दत्तात्रेय कैफी सम्मान प्रदान किया।

वीरप्पा मोइली को फादर कामिल बुल्के सम्मान

प्रशासनिक सुधार आयोग के अध्यक्ष **वीरप्पा मोइली** को उनकी कृति 'श्री रामायण अन्वेषणम्' के लिए फादर कामिल बुल्के रामायण अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा सम्मान से सम्मानित किया गया है। यह समारोह प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी दशरथ मल सिंघवी के शताब्दी वर्ष के शुभारम्भ के सिलसिले में मंगलवार, 28 मार्च 2007 को आयोजित किया गया। भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद के अध्यक्ष डॉ० कर्ण सिंह ने स्वतन्त्रता आन्दोलन में सिंघवी के योगदान की चर्चा करते हुए कहा कि उन्होंने जोधपुर रियासत के भारत संघ में विलय में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। इस समारोह में स्व० दशरथ मल के पुत्र और ब्रिटेन में भारत के पूर्व उच्चायुक्त लक्ष्मीमल सिंघवी और पौत्र एवं कांग्रेस प्रवक्ता अभिषेक मनु सिंघवी भी उपस्थित थे।

> मानवता निश्चय ही दरिद्र होती यदि शताब्दियों में फैली मानव सभ्यता को महान् ग्रन्थों ने पोषित और संवर्द्धित नहीं किया होता। —**डॉ० कर्ण सिंह**

आपका पत्र

'भारतीय वाङ्मय' का मार्च, 2007 अंक देखकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई है। प्रसाद की 'श्यामा' को आपने खूब खोज निकाला। इस खोज से आपने पाठक जगत को उपकृत किया है, बारम्बार बधाई। 'यत्र-तत्र-सर्वत्र' स्तम्भ के अन्तर्गत गतिविधियों की एक घनीभूत झलक आज के घोर उपभोक्तावादी परिवेश में मन प्राण को आह्लादित करने वाली शीतल मन्द सुगन्ध बयार सी लगती है। इससे साहित्यिक समृद्धि का भी एहसास होता है। समारोहों का संक्षिप्त विवरण भी पत्रिका के आकर्षण का एक प्रमुख बिन्दु है। साहित्य के महत्त्व को रेखांकित करने वाली आपकी सजग दृष्टि निश्चित रूप से स्तुत्य है।

—**श्याम विद्यार्थी,** इलाहाबाद

मार्च के 'भारतीय वाङ्मय' में 'प्रसादजी' के सम्बन्ध में खोजपूर्ण आलेख पढ़कर प्रसन्नता हुई। शब्दों से किसी रचना का अर्थ तो समझा जा सकता है, पर रचनाकार के जीवन के अंतरंग प्रसंगों की जानकारी उस रचना के मर्म को समझने में सहायक होती है। आपका आलेख 'प्रसाद' साहित्य का अध्ययन-अध्यापन करने वाले विद्यार्थियों-अध्यापकों के लिए बहुमूल्य सिद्ध होगा।

—**डॉ० राकेश गुप्त,** अलीगढ़

यत्र-तत्र-सर्वत्र

हिन्दी की पुस्तकों में होगा बदलाव

मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने एनसीईआरटी की हिन्दी की पुस्तकों की कुछ कहानियों और कविताओं को बदलने या हटाने का फैसला किया है। इसे लेकर हुए विरोध के कारण यह निर्णय लिया गया है कि इससे कुछ समुदायों की भावनाओं को ठेस पहुँचा है।

जब भी सरकार बदलती है, पुस्तकों के पाठ और विषय बदल जाते हैं। राजनीति यानी वोट के लिए धर्म, जाति, सम्प्रदायों को इस्तेमाल किया जाता है। यह कब तक होगा? संवेदनशील साहित्य समाज को जोड़ता है, उसे निरपेक्ष भाव से क्यों नहीं प्रस्तुत किया जाता?

ब्रिटेन में हिंग्लिश

अब ब्रिटिशों को लगने लगा है कि अगर उन्हें विकास की दौड़ में बने रहना है, तो शाही अंग्रेजी छोड़कर उस मिश्रित अंग्रेजी को अपनाना होगा, जो गैर-ब्रिटिशों के बीच धड़ल्ले से बोली जाती है। हालांकि ब्रिटिश सरकार ने बीते दिनों निर्देश जारी किया था कि ब्रिटेन में बसने वाले एशियाई मूल के लोग मानक अंग्रेजी सीखें। लेकिन डेमो नाम की एक प्रबुद्ध संस्था का तो यहाँ तक कहना है कि मानक अंग्रेजी अब कालातीत हो चुकी है। वह मानती है कि ब्रिटेन ने दुनिया भर में भिन्न-भिन्न तरह से बोली जाने वाली अंग्रेजी को प्रोत्साहित नहीं किया, तो वह अपनी भाषा खो देगा। ब्रिटेन में एशियाइयों की बड़ी आबादी बस गई है। खासकर भारत और पाकिस्तान से जाकर वहाँ बसे लोग हिंगिलश बोलते हैं, जो हिन्दी और अंग्रेजी का मिश्रण है। नतीजतन बदमाश, टाइम पास, पैजामा, बंग्लो, पण्डित, ठग जैसे शब्द मानक अंग्रेजी में घुस गए हैं। ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी ने तो इन जैसे शब्दों को बहुत पहले अपना लिया। महानगरों में रह रही हमारी नई पीढ़ी हिन्दी-अंग्रेजी के मिले-जुले रूप में अपनी बात कहती है। हिन्दी अखबारों में अंग्रेजी के स्वत:स्फूर्त प्रवाह के बीच भाषा का शुद्धतावादी आग्रह स्वाभाविक ही खो गया। बॉलीवुड में *क्रेजी किया रे* जैसे गीत लिखे जाने लगे हैं। ऐसे में, भाषिक शुद्धता के आग्रह का तो कोई अर्थ नहीं है।

फ्रेंच में अंग्रेजी का अतिक्रमण

वैश्वीकरण का प्रभाव है कि जो फ्रेंच अपनी भाषा में अंग्रेजी शब्दों का प्रवेश नहीं होने देते थे, उनके लिए अस्पृश्य थे, अब उन्हें भी अंग्रेजी शब्दों को स्वीकार करना पड़ रहा है।

राजस्थान में पुस्तकालयों का विकास

राजस्थान सरकार के राज्य शिक्षामंत्री श्री वासुदेव देवयानी ने घोषणा की कि राज्य में समस्त सार्वजनिक पुस्तकालयों को कम्प्यूटर की सुविधा प्रदान की जायगी ताकि पाठकों और सदस्यों को आधुनिक सुविधा प्राप्त हो सके। उन्होंने यह भी बताया कि छोटे पुस्तकालयों को मण्डलीय मुख्यालय से संबद्ध किया जायगा और लोगों में पुस्तक पढ़ने की प्रवृत्ति के विकास के लिए पंचायत स्तर पर भी पुस्तकालय खोले जायेंगे।

अन्य प्रदेशों से भी ऐसी योजना की आशा की जाती है।

पाटोत्सव ब्रजभाषा समारोह

साहित्य मण्डल, श्रीनाथद्वारा के तत्वावधान में 9 और 10 फरवरी 2007 को पाटोत्सव ब्रजभाषा समारोह आयोजित हुआ। संस्था के प्रधानमंत्री श्री भगवतीप्रसाद देवपुरा के अनुसार समारोह की सामूहिक अध्यक्षता श्री गुलाब खंडेलवाल (अमेरिका), श्री श्रीधर शास्त्री, डॉ० बद्रीनारायण तिवारी, डॉ० ओम आनन्द सरस्वती ने की।

इस अवसर पर आजादी की कहानी डाक टिकट प्रदर्शनी, संस्था के बालकों द्वारा श्री कुंभनदास नाटिका का मंचन, सारस्वत सम्मान, ब्रजभाषा की विभिन्न विधाओं पर पत्र-वाचन, सम्पादकशिरोमणि की मानद उपाधि-वितरण कार्यक्रम, स्वामी (डॉ०) श्री ओम आनन्दजी सरस्वती का अभिनन्दन, ब्रजभाषा कवि-सम्मेलन, काल-कवलित पत्र-पत्रिकाओं की प्रदर्शनी, विद्यालयीय बालक-बालिकाओं को पुरस्कार व प्रशस्ति-पत्र वितरण, ब्रजभाषा समस्यापूर्ति आदि भव्य कार्यक्रम सम्पन्न हुए। इस समारोह में निर्मित नूतन 'प्रकाशन-कक्ष' का उद्घाटन तथा संस्था की त्रैमासिक पत्रिका 'हरसिंगार' का लोकार्पण भी किया गया।

समारोह में विशिष्टजनों को सारस्वत सम्मान स्वरूप शॉल, उत्तरीय एवं प्रशस्तिपत्र देकर किया गया।

संस्थाध्यक्ष श्री नरहरिजी ठाकर ने धन्यवाद देते हुए आगामी पाटोत्सव 28 फरवरी 2008 की घोषणा की।

किताबों के अनोखे नाम पर पुरस्कार

पुस्तकों का नाम उसके अन्दर की विषय-वस्तु के बारे में परिचय देता है। कुछ पुस्तकों के गम्भीर, तो कुछ के नाम बड़े अनोखे होते हैं। ऐसे अनोखे नाम वाली पुस्तकों को ही पुरस्कृत करने के लिए इन दिनों लन्दन में कुछ पुस्तकों का चुनाव किया गया है।

इन्हीं अनोखे नामों को लोगों के सामने लाने और उनके पसन्द को जानने के लिए लन्दन की कुछ प्रकाशन कम्पनियाँ वोटों के जरिए अनोखे टाइटल का चुनाव करेंगी। प्रकाशकों द्वारा सूचीबद्ध की गई पुस्तकों का नाम इस प्रकार है। मसलन, 'हाउ ग्रीन वेयर द नाजीज'?, 'द स्ट्रे शॉपिंग कार्ट्स ऑफ ईस्टर्न नॉर्थ अमेरिका' के अतिरिक्त 'प्रोसीडिंग ऑफ द एटींथ इण्टरनेशनल सीविड सिंपोजियम'। पुस्तकों के इन नामों में सबसे अनोखा नाम का चुनाव जनता के वोट द्वारा किया जाएगा। जनता द्वारा सबसे अनोखे नाम की पुस्तक के लेखक को इनाम देगी।

महादेवी वर्मा जन्म शतवार्षिकी

कुमाऊँ विश्वविद्यालय, मल्ला, रामगढ़ (नैनीताल) में 26 मार्च 2007 को कुमाऊँ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० सी०पी० बर्थवाल की अध्यक्षता और प्रो० निर्मला जैन, पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय के मुख्य अतिथित्व में दीपशिखा महादेवी वर्मा जन्म शतवार्षिकी 2007 का आयोजन हुआ। इस अवसर पर अशोक वाजपेयी, केदारनाथ सिंह, लीलाधर जगूड़ी, मंगलेश डबराल आदि कवियों ने महादेवीजी की तीन-तीन कविताओं का पाठ करते हुए उनकी परम्परा को स्मरण किया।

नैनीताल से 25 किमी दूर मल्ला रामगढ़ में महादेवी वर्मा का निजी आवास 'मीरा कुटीर' है। जहाँ वे 1937 से सातवें दशक तक गर्मियों में निरन्तर आती रही थीं। हिन्दी के अनेक साहित्यकार इस भवन में रह चुके हैं। यहीं महादेवीजी की कई गद्य और पद्य रचनाओं के अतिरिक्त 'दीपशिखा' (1942) की समस्त कविताएँ लिखी गईं। इस संग्रह का पुनर्मुद्रण किया गया है। इसका विमोचन उनकी सौवीं वर्षगाँठ पर इसी भवन में किया गया है। 1996 में तत्कालीन उत्तर प्रदेश शासन, स्थानीय निवासियों तथा क्षेत्र के कुछ साहित्यकारों ने इस आवास को 'महादेवी साहित्य संग्रहालय' का रूप दिया। तब से यहाँ राष्ट्रीय स्तर के अनेक साहित्यिक कार्यक्रमों का आयोजन होता रहा है।

> अंग्रेजी के माध्यम से गोर्की-टॉल्स्टॉय को पढ़ा है, जिनका प्रभाव मुझ पर कहीं न कहीं पड़ा होगा। लेकिन संस्कृत मेरे लिए बेहद आकर्षण की भाषा थी। वेद पढ़ने के लिए मैं सब जगह घूमी। हिन्दू विश्वविद्यालय ने तो मुझे भरती ही नहीं किया। उन्होंने कहा, ब्राह्मणेतर वर्ण और उस पर स्त्री, हम वेद नहीं पढ़ायेंगे। किन्तु मेरा हठ था।
>
> **—महादेवी वर्मा**

महादेवी वर्मा हिन्दी की ही नहीं, आधुनिक भारत की भी सम्भवत: पहली स्त्री रचनाकार हैं, जिनके पास परम्परा और प्रगति का द्वंद्व है। उनकी रचनाओं व जीवन, दोनों में आधुनिक भारतीय स्त्री के अंकुरण को साफ देखा जा सकता है। पर

आधुनिकता के स्रोतों की तलाश में आज हम उन अपरिचित कोनों-अंतरों में झाँकते हैं, जहाँ हमारी जड़ें हैं ही नहीं। उम्मीद की जानी चाहिए कि महादेवी वर्मा की इस जन्मशती पर हम उन मुद्दों पर पुनर्विचार करेंगे, जिन्हें साकार करने के लिए उन्होंने अपनी सारी जिन्दगी संघर्ष किया। **—बटरोही**

निदेशक, महादेवी वर्मा सृजन पीठ

स्वतंत्रता संग्राम संग्रहालय

स्वतंत्रता के 60 वर्ष पर दिल्ली लाल किले में पुरातत्त्व विभाग द्वारा स्वतंत्रता संग्राम संग्रहालय स्थापित किया जायगा। इस संग्रहालय में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के देश तथा विदेश में भी किये गये प्रयासों-प्रयत्नों को दर्शाया जायगा। स्वतंत्रता सेनानियों और शहीदों जो इतिहास में लुप्त हो चुके हैं उन्हें उजागर किया जायगा। भारत के उपराष्ट्रपति श्री भैरो सिंह शेखावत ने दो वर्ष पूर्व अफ्रीका से लौटने पर इसका सुझाव दिया था।

मद्रास हाईकोर्ट में तमिल को मान्यता के लिए प्रयास

द्रविड़ मुनेत्र कड़गम और पाण्डिचेरी के संसद सदस्यों ने केन्द्रीय परिवहन मंत्री श्री टी०आर० बालू के नेतृत्व में प्रधानमंत्री से अनुरोध किया है कि यथाशीघ्र तमिल को मद्रास उच्च न्यायालय में न्यायालय की भाषा के रूप में मान्यता दी जाय। तमिलनाडु विधानसभा द्वारा पारित प्रस्ताव पर यथाशीघ्र राष्ट्रपति की स्वीकृति प्राप्त की जाय। उल्लेखनीय है कि पश्चिम बंगाल में बंगला को उच्च न्यायालय की भाषा के रूप में मान्यता प्राप्त नहीं है। उत्तर भारत के न्यायालयों में हिन्दी को मान्यता प्राप्त है।

जे०एन०यू० में जापानी भाषा

भारत में जापान का दूतावास जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय जेएनयू को भाषा अध्ययन उपकरणों के लिये लगभग 31 लाख रुपये देगा। यह धनराशि दूतावास की आधारभूत सांस्कृतिक योजनाओं को सहायता देने की योजना के अन्तर्गत दी जायेगी। जेएनयू भारत में एकमात्र विश्वविद्यालय है जहाँ जापानी भाषा में स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर का अध्ययन-अध्यापन होता है। जापान से मिली धनराशि का उपयोग विश्वविद्यालय के जापानी भाषा विभाग में उपकरणों को उन्नत बनाने के लिये किया जायेगा।

48 खण्डों में लोक भाषाओं का शब्दकोश

केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा देश में पहली बार हिन्दी की लोकभाषाओं का वृहत शब्दकोश 48 खण्डों में प्रकाशित कर रहा है। इस महत्त्वाकांक्षी योजना के प्रधान सम्पादक प्रसिद्ध कोशकार अरविदकुमार को बनाया गया है जिन्होंने हिन्दी का पहला थिसारस समानान्तर कोश तैयार किया था। संस्थान के निदेशक डॉ० शंभुनाथ के अनुसार इस योजना के प्रथम चरण में पाँच लोकभाषाओं ब्रज, छत्तीसगढ़ी, बुंदेली, राजस्थानी और भोजपुरी के शब्दकोश तैयार किए जाएँगे। उम्मीद है कि दो वर्ष में इन पाँच भाषाओं के शब्दकोश तैयार हो पाएँगे। संस्थान ने इस योजना को मूर्त रूप देने के लिए दिल्ली में दो दिन की कार्यशाला आयोजित की जिसमें देश के कई जाने-माने भाषाविदों ने भाग लिया। संस्थान के उपाध्यक्ष एवं प्रसिद्ध पत्रकार रामशरण जोशी ने कार्यशाला को सम्बोधित करते हुए कहा कि भूमण्डलीकरण के दौर में सैकड़ों लोकभाषाएँ दम तोड़ चुकी हैं और कई खत्म होने की कगार पर हैं। किसी भी देश में राजभाषा या राष्ट्रभाषा की जड़ें उसकी लोकभाषाओं और बोलियों में निहित होती हैं। यदि लोकभाषाओं की उपेक्षा की गयी तो मुख्य भाषाएँ भी अपने आप खत्म हो जाएँगी। शब्दकोश निर्माण योजना के प्रधान सम्पादक अरविन्दकुमार ने कहा कि यह एक ऐतिहासिक अवसर है। उन्हें यह दायित्व निभाकर प्रसन्नता होगी।

प्रवासी भारतीय विश्वविद्यालय

भारत सरकार ने प्रवासी भारतीयों के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अन्तर्गत विश्वविद्यालय शुरू करने का निश्चय किया है।

विश्वविद्यालय समुद्र पार भारतीय ट्रस्टों और संस्थाओं द्वारा स्थापित किया जायगा। मिनिस्ट्री ऑफ ओवरसीज इण्डियन अफेयर्स के निर्देशन में शिक्षा के क्षेत्र में अनुभवी तथा योग्य व्यक्तियों का सहयोग लिया जायगा।

पेरिस पुस्तक मेले में भारतीय लेखक

पेरिस में 23-27 मार्च 2007 में आयोजित पुस्तक मेले में प्रमुख भारतीय लेखकों को आमंत्रित किया गया। विक्रम सेठ, यू० आर० अनन्थमूर्ति, अमित चौधरी, शशि देशपाण्डे, उर्वशी बुटालिया, उपमन्यु चटर्जी, शशि थरूर आदि ने मेले में भाग लिया। अरुन्धती राय, रोहित मिस्त्री, किरन देसाई, अनिता देसाई, सलमान रशदी, अमिताव घोष, अमर्त्य सेन भी आमंत्रित थे। मेले में अलका सरावगी, के०बी० वैद्य, के सच्चिदानंदन, अमित चौधरी ने वायकोम मोहम्मद बशीर, ओ०वी० विजयान, निर्मल वर्मा, रवीन्द्रनाथ टैगोर, बंकिमचन्द्र चटर्जी तथा शरतचन्द्र चटर्जी आदि के साहित्य पर विस्तृत चर्चा हुई।

राष्ट्रीय अनुवाद मिशन

राष्ट्रीय ज्ञान आयोग के प्रस्ताव तथा प्रधानमंत्री के सुझाव पर राष्ट्रीय अनुवाद मिशन की स्थापना की जायगी। इस हेतु 250 करोड़ की निधि स्थापित की जा रही है। इसके अन्तर्गत साहित्य ही नहीं, ज्ञान के सभी विषयों तथा भाषाओं के महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों का अनुवाद किया जायगा।

आयोग को आशा है कि 2,00,000 लोगों को काम मिलेगा। इसके लिए अनुवादकों का एक राष्ट्रीय रजिस्टर भी रखा जायगा।

स्मृति-शेष

पत्रकार प्रदीप तिवारी का असामयिक निधन

पत्रकार व साहित्यकार **प्रदीप तिवारी** का बुधवार, 14 मार्च 2007 को भोर में मुम्बई के एक अस्पताल में निधन हो गया। वह लगभग 41 वर्ष के थे। वे कुछ दिनों से पैंक्रियाज की तकलीफ से पीड़ित थे। उनकी अंत्येष्टि गुरुवार को मुम्बई में हुई।

वाराणसी में अरसे तक 'इण्डिया डे नाइट' का सम्पादन करते हुए पत्रकारिता से जुड़े रहने के बाद श्री तिवारी मुम्बई चले गये थे। वहाँ उन्होंने कई फिल्मों में संवाद-लेखन किया। उनकी प्रकाशित पुस्तक 'सिनेमा के शिखर' को काफी प्रतिष्ठा मिली। इसके पहले उनका कवितासंग्रह 'पाताल में बोई स्मृतियाँ' छपी थी। उन्होंने 'पांडेय बेचन शर्मा उग्र' की प्रतिनिधि कहानियों का सम्पादन किया था। वे गोपालगंज (बिहार) के तिवारीपुर (चकिया) गाँव के मूल निवासी थे। उनकी पढ़ाई-लिखाई वाराणसी और दिल्ली में हुई। परिवार में उनकी पत्नी के अलावा माता-पिता व भाई-बहन हैं।

डॉ० देवर्षि सनाढ्य का निधन

हिन्दी विभाग दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर के आचार्य एवं नाट्यशास्त्र तथा काव्यशास्त्र के विद्वान् **डॉ० सनाढ्य** गत 4 मार्च 2007 को 90 वर्ष की आयु में दिवंगत हो गये। उनका जन्म धामपुर में 4 मार्च 1917 को हुआ था। अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़ से एम०ए० एवं पी-एच०डी० की उपाधि आपने प्राप्त की थी। गोरखपुर विश्वविद्यालय आपने 1958 ई० से 1980 ई० तक क्रमशः प्रवक्ता एवं रीडर के पद पर कार्य किया। आपकी प्रसिद्ध पुस्तकों में 'हिन्दी के पौराणिक नाटक' तथा 'हिन्दी साहित्य की बीसवीं शताब्दी प्रतिनिधि कवि' प्रमुख है। आप अपने पीछे क्रमशः पूर्ण परिवार छोड़ गये हैं। उन्हें 'भारतीय वाङ्मय' की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि।

प्रो० सत्यप्रकाश मिश्र का निधन

इलाहाबाद विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष और प्रख्यात आलोचक **प्रो० सत्यप्रकाश मिश्र** का मंगलवार, 27 मार्च 2007 को संध्या पौने सात बजे निधन हो गया। वे 62 वर्ष के थे। पिछले वर्ष से गले की बीमारी से पीड़ित थे। इसी वर्ष जून में वे सेवानिवृत्त होने वाले थे। हाल ही में उन्हें उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान ने साहित्य भूषण सम्मान प्रदान किया था। अपने पीछे वे पत्नी के अतिरिक्त तीन बेटे और तीन बेटियाँ छोड़ गये हैं। उनके निधन से हिन्दी जगत की अपूरणीय क्षति हुई है।

संगोष्ठी/लोकार्पण

दो दिन : कविता के साथ

बाएँ से सर्वश्री सुदीप बनर्जी, भगवत रावत, हबीब तनवीर, अक्षयकुमार जैन, बृजबाला सिंह

'अच्छी कविता वही है जो लम्बे समय तक याद रहे। यह खूबी भगवत रावत की कविताओं में दिखती है' ये बातें गत दिनों हिन्दी साहित्य के एक प्रमुख केन्द्र मध्य प्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन, भोपाल के सभागार में समकालीन कविता के प्रमुख कवि भगवत रावत की काव्य-यात्रा पर रचित पुस्तक 'भगवत रावत : अपने समय का चरितार्थ' के लोकार्पण के अवसर पर दिल्ली से पधारे प्रमुख कवि पंकज सिंह ने कही। पुस्तक का विमोचन प्रसिद्ध नाट्यकर्मी हबीब तनवीर, कवि सुदीप बनर्जी तथा अक्षयकुमार जैन ने किया। लेखिका डॉ० बृजबाला सिंह ने पुस्तक लिखने के उद्देश्य एवं औचित्य पर विचार व्यक्त करते हुए कहा कि ''भगवत रावत साठोत्तरी आन्दोलन के पश्चात एवं समकालीन रचने वाले कवियों में अपनी अलग पहचान रखते हैं। उनका काव्य प्रकृति का नहीं मानव-प्रकृति का काव्य है। किसी रचनाकार के सम्पूर्ण रचनाकर्म को मात्र एक पुस्तक में विश्लेषित नहीं किया जा सकता। कई पुस्तकें उनके रचनाकर्म पर लिखी जा सकती हैं।''

अध्यक्षीय वक्तव्य में हबीब तनवीर ने कहा कि ''भगवत रावत की कविता उनके मुँह से निकली, मेरे कानों तक पहुँची और दिल में उतर गयी''। इस प्रकार भगवत रावत की कविता पर उन्होंने सब कुछ कह दिया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि सुदीप बनर्जी ने कहा कि ''इस किताब से एक साथ भगवत रावत के काव्य को अधिक से अधिक समझने का मौका मिला। तमाम प्रकाशित संग्रहों के साथ-साथ अप्रकाशित कविताओं का जिक्र इस किताब की बहुत बड़ी देन है। पूरणचन्द्र रथ ने पुस्तक की भाषा एवं विश्लेषण को महत्त्वपूर्ण बताया। वहीं काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के हिन्दी प्रवक्ता डॉ० आशीष त्रिपाठी ने क्रमवार कविताओं का वर्णन एवं धैर्यपूर्वक भगवत रावत के सम्पूर्ण रचनाकर्म को किताब की विशेषता बताया और कहा कि ऐसा काम अन्य कवियों पर भी किया जाना चाहिए। कवि राजेश जोशी ने भगवत रावत की कविता में लोक एवं बोली के प्रयोग हेतु तथा परम्परा से जुड़ने के लिए उत्कृष्ट कहा।''

मीडिया विमर्श के 'सम्पादक की सत्ता और महत्ता' विशेषांक का लोकार्पण

'सम्पादक की सत्ता और महत्ता' पर केन्द्रित 'मीडिया विमर्श' के तीसरे अंक का लोकार्पण करते हुए महामण्डलेश्वर स्वामी शारदानंद सरस्वती ने कहा कि ''मीडिया समाज को संगठित एवं सुसंस्कारित करने का काम करे। इससे ही समाज में सुख और शान्ति रहेगी।'' पत्रिका के इस विशेषांक में देश जाने-माने पत्रकारों एवं सम्पादकों के विचार प्रकाशित हुए हैं।

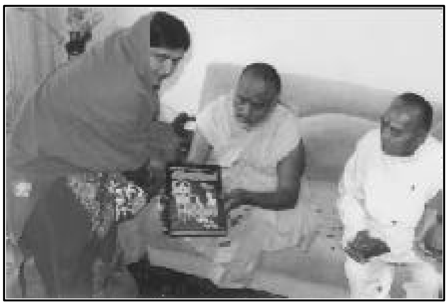

स्वामी शारदानंद सरस्वती द्वारा 'मीडिया विमर्श' का लोकार्पण

बिलासपुर के जरहाभाठा स्थित 'तुलसीकुंज' में आयोजित एक सादे समारोह में स्वामी शारदानंद ने कहा कि समाज को दिशा देने में प्रिण्ट हो या इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, दोनों की काफी महत्त्वपूर्ण भूमिका है। उसे समाज को जोड़ने के लिए काम करना चाहिए। पत्रकारिता से सात्विकता के साथ सामाजिक संगठन मजबूत हों, समाज में एकता को बढ़ावा मिले। साथ ही कलमकार इस बात का ध्यान भी रखें कि समाज में कुरीतियों को बढ़ावा न मिले। उन्होंने कहा कि संगठित और सुसंस्कारित समाज रहेगा तो समाज के भीतर शान्ति रहेगी। यदि समाज संगठित और संस्कारित नहीं रहेगा तो अराजकता, अशान्ति और भ्रष्टाचार चलता रहेगा। रेल का पटरी पर चलना जितना जरूरी है, इसी तरह जीवन को भी नियम और संयम की पटरी पर चलाना आवश्यक है। उन्होंने देश की शिक्षा व्यवस्था पर चिन्ता जताई और कहा, आज देश में दिशाहीन शिक्षा दी जा रही है। पहले तो लोग नौकरी पाने के लिए पढ़ते थे, अब तो पढ़कर भी नौकरी नहीं मिलती। आज की शिक्षा में समाज और राष्ट्र का चिन्तन कहीं दिखाई नहीं देता। इसके पूर्व स्वामी शारदानंद ने श्रीमती भूमिका द्विवेदी द्वारा सम्पादित 'मीडिया विमर्श' के तृतीय अंक का लोकार्पण किया।

> पीत स्वर्ण का मूल्य होता है किन्तु ज्ञान अमूल्य है। **—एक चीनी लोकोक्ति**

संगीत की रसिक परम्परा

डॉ० प्रमिला प्रियहासिनी

प्रथम संस्करण : 2007

ISBN : 81-7124-549-8

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

मूल्य : 150.00

इस ग्रन्थ में सुव्यवस्थित रूप से संगीत के विविध आयामों, विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है। संगीत के लौकिक एवं लोकोत्तर क्षितिज को अपनी संवेदनशील दृष्टि से अनुभूत कर शब्दों में अभिव्यक्त किया है। संगीत के कला पक्ष तथा भाव पक्ष दोनों को सम्यक् रूप से स्पष्ट किया है, उनकी महत्ता को बताया है। संगीत एक ओर यदि स्वान्तः सुखाय होता है तो दूसरी ओर स्वात्म से सर्वात्म की ओर मानव हृदय को उन्मुख करता है।

'नादाधीनं जगत्सर्वम्'—साधकों ने, योगियों ने नाद की सर्वव्यापिनी सत्ता को जाना, महत्ता को समझा, नाद की अपार, अथाह शक्ति के प्रति सचेत हो वे नतमस्तक हुए, समर्पित हुए और कालान्तर में इसी नाद साधना का आधार संगीत बना। भारतीय चिन्तन ने नाद को ब्रह्म के रूप में प्रतिष्ठित किया और संगीत साधना को नाद ब्रह्म की उपासना माना। नाद ब्रह्म के उपासक, संगीत मर्मज्ञ राजा श्यामानन्द सिंहजी के गहन संगीत प्रेम, उनकी सहृदयता, उनका संवेदनशील व्यक्तित्व, संगीतज्ञों के प्रति उनकी असीम उदात्त, आदर भावना, उनके सांगीतिक जीवन से जुड़ी अनेक घटनाओं, अनेक संस्मरणों से यह पुस्तक अनुप्राणित हुई है। उनके जीवन से जुड़े अनेक रोचक, हृदयग्राही, शिक्षाप्रद प्रसंगों ने पुस्तक को समृद्ध किया है।

बड़े गुरु

की चित्र-व्यंग्य काव्य कृति

आज भी वही बनारस है

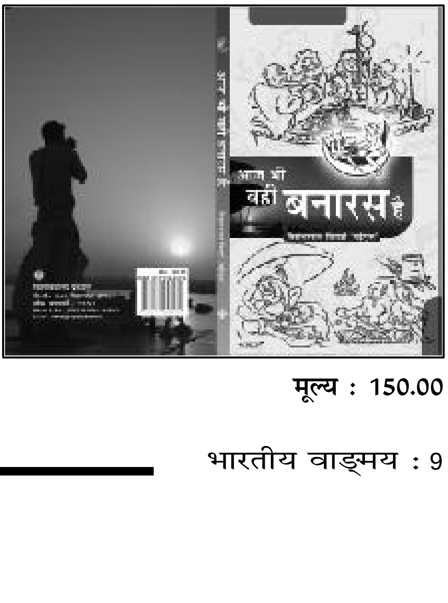

मूल्य : 150.00

पुस्तक समीक्षा

योग साधना : आधुनिक परिप्रेक्ष्य में

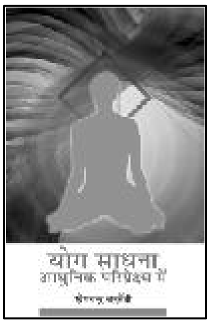

खेमचन्द्र चतुर्वेदी

प्रथम संस्करण : 2007
ISBN : 81-7124-533-1
विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
मूल्य : 100.00

मानव के अन्तर्मन में जो शुद्ध बुद्धि चैतन्य अमर सत्ता है वही परमात्मा है। मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार के चतुष्टय से युक्त चेतन को जीवन या परमात्मा कहते हैं। यह परमात्मा से भिन्न भी है, अभिन्न भी। इसे द्वैत भी कहते हैं, अद्वैत भी। जैसे अग्नि से ही चिन्गारी निकलती है, चिन्गारी को अग्नि से अलग कहा जा सकता है, पर अग्नि बिना चिन्गारी का कोई अस्तित्व नहीं। परमात्मा अग्नि, जीव चिन्गारी है, दोनों अलग भी हैं और एक भी। गीता में इन दोनों का अस्तित्व स्वीकारते हुए एक को क्षर दूसरे को अक्षर कहा गया है। आत्मिक एकता, दोनों के मिलन में ही सुख है, इसी को यौगिक शब्दावली में जीवात्मा परमात्मा का मिलन कह सकते हैं। इस मिलन का ही दूसरा नाम 'योग' है।

भारतीय मनोविज्ञान के अनुसार यह योग पद्धति श्रेष्ठ है क्योंकि इसमें मनुष्य की रुचि और प्रवृत्ति ऊँची रहती है। सात्विकता, देवत्व को विकसित करने का प्रचुर अवसर मिलता है। मन शुद्ध होता है, मन को शान्ति, एकाग्रता मिलती है, आध्यात्मिक शक्तियाँ बढ़ती हैं। आज योग विद्या को सही दृष्टि से अपनाने की आवश्यकता है। मात्र आसन प्राणायाम ही योग नहीं, वास्तविक महत्त्व आन्तरिक साधना का ही है।

मनीषी की लोकयात्रा

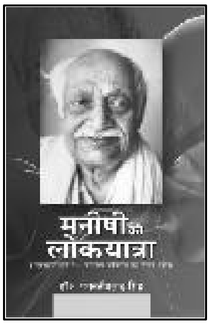

डॉ० भगवतीप्रसाद सिंह

नवम संस्करण : 2007
ISBN : 81-7124-88-7
विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
मूल्य : सजिल्द : 300.00 अजिल्द : 200.00

महामहोपाध्याय पं० गोपीनाथ कविराज वर्तमान युग के विश्वविख्यात भारतीय प्राच्यविद् तथा मनीषी रहे हैं। इनकी ज्ञान-साधना का क्रम वर्तमान शताब्दी के प्रथम दशक से आरम्भ हुआ और प्रयाण-काल (1975 ई०) तक वह अबाधरूप से चलता रहा। दीर्घकाल में उन्होंने पौरस्त्य तथा पाश्चात्य ज्ञान-विज्ञान की विशिष्ट चिन्तन-पद्धतियों का गहन अनुशीलन कर साहित्य, दर्शन और इतिहास के क्षेत्र में जो अंशदान किया है उससे मानव-संस्कृति तथा साधना की अंतर्धाराओं पर नवीन प्रकाश पड़ा है, नयी दृष्टि मिली है।

उन्नीसवीं शती के धार्मिक पुनर्जागरण और बीसवीं शती के स्वातन्त्र्य-आन्दोलन से अनुप्राणित उनकी जीवन-गाथा में युगचेतना साकार हो उठी है। प्राचीनता के सम्पोषक एवं नवीनता के पुरस्कर्ता के रूप में कविराज महाशय का विराट् व्यक्तित्व सन्धिकाल की उन सम्पूर्ण विशेषताओं से समन्वित है, जिनसे जातीय-तीवन प्रगति-पथ पर अग्रसर होने का सम्बल प्राप्त करता रहा है।

ऐसे मनीषी की जीवनकथा, साहित्य-साधना, सत्संग, पत्राचार, तत्त्वविचार, स्वात्म-संवेदन तथा लोक-परलोक-सम्बन्धी विभिन्न विषयों में रुचि और गति का अनुशीलन करते हुए इस कृति में पाठक आत्मदर्शी महात्माओं के साक्षात् सम्पर्क का आनन्दानुभव करेंगे।

आशा है, कविराजजी की यह ज्ञानोज्ज्वल गाथा स्वतन्त्रचेता साधकों, सारग्राही विद्वानों तथा श्रद्धालु भक्तों सभी के लिए समान रूप से अभिनन्दनीय होगी।

सौन्दर्यलहरी तन्त्र-दृष्टि और सौन्दर्य-सृष्टि

प्रभुदयाल मिश्र

प्रथम संस्करण : 2007
ISBN : 81-7124-537-4
विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
मूल्य : 120.00

शक्तिमान शिव शक्ति से अपृथक हैं, किन्तु उनके सत्य का प्रकटीकरण शिवा के सौन्दर्य निरूपण से ही किया जा सकता है। भारतीय प्रज्ञा का यह एक चमत्कार ही है कि यह अनुष्ठान आदि शंकर के द्वारा सम्पन्न किया गया जो स्वयं अद्वैत मत और निर्गुणोपासना के प्रवर्तक थे।

आदि शंकर की यह बहुश्रुत, बहुपठित और सर्वसिद्ध कृति सर्वत्र समादृत है। इसका दार्शनिक और साहित्य पक्ष जहाँ इनकी मुख्य धाराओं के प्रतिमान बनाता है, वहीं इसकी अनुष्ठान-क्षमता साधकों के लिए लोक और परलोक का मार्ग प्रशस्त करती है।

श्री प्रभुदयाल मिश्र योग और शक्तिपात में दीक्षित तथा वैदिक साहित्य के अन्वेषक-अध्येता हैं। उनकी 'सौन्दर्यलहरी-काव्यानुवाद' मध्यप्रदेश संस्कृत अकादेमी द्वारा 'व्यास-सम्मान' से अलंकृत है। इस कृति को जहाँ मूर्धन्य विद्वानों ने सराहा है, वहीं यह अनेक साधकों की 'पूजा का पर्याय' बनी हुई है। लेखक ने इस कृति के इस 'विशेष संस्करण' का कलेवर पुस्तक के दर्शन, तंत्र और साहित्य पक्ष को अक्षुण्ण रखते हुए तैयार किया है।

आदिशंकर ने आद्याशक्ति की दोनों आँखों के कानों के निकट पहुँचने (विशालाक्षी) को उनकी 'वेद की कविता' के रस-पान की आकांक्षा का प्रतीक बनाया है। शांकर दिग्विजय का वाराणसी सिंहद्वार थी। अत: वाराणसी में 'विशालाक्षी' से परा-विद्या का यह प्राकट्य बहुज्ञ पाठकों को इस शाश्वत रस-गंगा में अवश्य सराबोर करेगा।

पुस्तक में यन्त्र और उनके प्रयोग भी दिये गये हैं।

प्राचीन भारतीय प्रतिमा-विज्ञान एवं मूर्तिकला

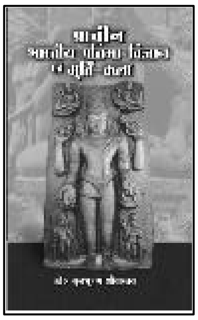

डॉ० बृजभूषण श्रीवास्तव

चतुर्थ संस्करण : 2007
ISBN : 81-7124-528-5
विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
मूल्य : सजिल्द : 320.00 अजिल्द : 220.00

प्राचीन भारतीय प्रतिमाएँ और मूर्तियाँ, अपने युग के शिल्प वैशिष्ट्य और सौन्दर्यबोध मात्र को उजागर नहीं करतीं, अपितु सांस्कृतिक विचारों तथा भावनाओं को भी मुखर अभिव्यक्ति प्रदान करती हैं। प्रस्तुत ग्रन्थ प्रतिमा और मूर्ति की विभाजक रेखा का सीमांकन करते हुए प्रतिमा निर्माण-परम्परा को विश्लेषित करता है। विष्णु, शिव, सूर्य, देवियों, गणपति, स्कन्द कार्तिकेय, जैन और बौद्ध प्रतिमाओं का विधानों एवं लक्षणों तथा उसके आधार पर निर्मित प्रतिमाओं का शास्त्रीय विवेचन और क्रमिक विकास को स्पष्ट करता है। साथ ही शैली और शिल्प सौष्ठव से सम्बन्धित विशेषताओं के आधार पर भी उनका मूल्यांकन करता है।

मूर्तिकला-खण्ड के अन्तर्गत सिन्धु सभ्यता की मूर्तिकला, मौर्य, शुङ्ग, सातवाहन, कुषाण, गुप्त, पाल एवं चन्देलकालीन मूर्तियों को ऐतिहासिक कालों के परिदृश्य में विविध कालों के अन्तर्गत अस्तित्व में आने वाली शैलियों के आधार पर संरचना, निर्माणशैली, तकनीक, शिल्प सौन्दर्य, भावसंबोध, सांकेतिकता, उद्देश्यपरकता, भावना, संवेग, विचार, क्षेत्रीयता, शिल्पी की निजता आदि के वृहत्तर सन्दर्भों में व्याख्यायित करता है।

बिखरे कलावशेषों का क्रमबद्ध संयोजन; शास्त्रीय लक्षणों पर निर्मित प्रतिमाओं का प्रतिमाशास्त्रीय परम्परा के आधार पर विश्लेषण; विविध कालों और शैलियों में निर्मित मूर्तियों की संरचना, सौन्दर्य और भावसंबोध की दृष्टि से बोधगम्य व्याख्या; प्रतिमाओं और मूर्तियों के आधार पर सांस्कृतिक विचारों एवं भावनाओं का उद्घाटन; 62 (बासठ) मूर्ति-चित्रों के माध्यम से प्रतिमाओं एवं मूर्तियों का सरल अभिज्ञान; सरल, सुबोध, भावगम्य और प्रवाहमयी भाषा इस ग्रन्थ का वैशिष्ट्य है।

मुगलकालीन सरकार तथा प्रशासनिक संरचना

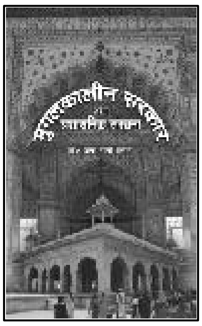

डॉ० ऊषारानी बंसल

प्रथम संस्करण : 2007

ISBN : 81-7124-535-8

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

मूल्य : 100.00

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग की वरिष्ठ रीडर डॉ० ऊषारानी बंसल द्वारा रचित पुस्तक 'मुगलकालीन सरकार तथा प्रशासनिक संरचना' सम्बन्धित विषय के साहित्य में स्वागतयोग्य नवीन प्रकाशन है। पुस्तक दस अध्यायों में विभाजित है। प्रथम अध्याय में मुगल साम्राज्य के विभिन्न घटकों जैसे तुर्क, अफगान आदि तथा उद्देश्यों जैसे अविभाज्य संप्रभुता प्राप्त करना आदि का विवेचन है। दूसरे अध्याय में मुगल साम्राज्य के स्वरूप का मुगल सम्राटों की धार्मिक नीति का विवरण है। उसका ब्रिटेन के स्टूअर्ट राजाओं की नीति से तुलना ने इसे रोचक बना दिया है। तीसरे अध्याय में इस्लामिक राज्य के सिद्धान्त की व्याख्या करते हुए मुगल सम्राटों विशेषतया अकबर के द्वारा उसमें संशोधन करके मुगल राजत्व के एक अधिक सहिष्णु सिद्धान्त के विकास को स्पष्ट किया गया है। चौथे अध्याय में मुगलों के केन्द्रीय प्रशासन की विवेचना की गयी है, जो राजतंत्रीय और पूर्णतया केन्द्रीकृत था। उसकी धुरी सम्राट था। पाँचवें अध्याय में सम्राट की सहायता के लिये स्थापित विभिन्न विभागों का उपयोगी जानकारी से भरा हुआ विवेचना दिया गया है। छठें अध्याय मुगलराज्य की न्याय व्यवस्था की जानकारी दी गयी है। सातवें अध्याय में मुगल सैन्य व्यवस्था की विवेचना की गयी जो मनसवदारी प्रथा पर आधारित थी। आठवें अध्याय में मुगलकालीन भू-राजस्व व्यवस्था की विवेचना की गयी है। अकबर के दीवान राजा टोडरमल द्वारा विकसित यह व्यवस्था पुरानी भू-राजस्व व्यवस्थाओं से अधिक संतोषजनक थी। नवें अध्याय में मुगलों की प्रान्तीय प्रशासनिक व्यवस्था तथा उसके प्रमुख अधिकारियों का विवरण है। दसवें अध्याय में स्थानीय प्रशासन का परिचय दिया गया है।

पुस्तक अपने विषय के सम्बन्ध में उपयोगी जानकारी देती है। यह सरल और सुबोध भाषा में लिखी गयी है। यद्यपि प्रस्तुत विषय पर अंग्रेजी भाषा में अनेक श्रेष्ठ पुस्तकें उपलब्ध हैं, तथापि हिन्दी में उनका लगभग अभाव है। ऐसी स्थितियों में डॉ० बंसल ने यह पुस्तक लिखकर हिन्दी भाषा के भण्डार को भरा है तथा विद्यार्थियों और शोधार्थियों के लिए एक ज्ञानवर्धक पुस्तक की रचना की है। पुस्तक उपयोगी और संग्रहणीय है।

—पी०डी० कौशिक, '*गाण्डीव से*'

पूर्व मध्यकालीन जैन कला

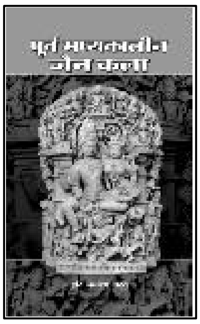

डॉ० अवधेश यादव

प्रथम संस्करण : 2007

ISBN : 81-7124-538-2

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

मूल्य : 250.00

जैनकला का उद्भव दसवीं शताब्दी से पूर्व हुआ, किन्तु इसका विकास दसवीं से बारहवीं शताब्दी के मध्य हुआ। इस ग्रन्थ में लेखक ने कहावली, प्रवचन स्रारोद्धार एवं तिलोणपण्णति 24 जिनों के स्वतंत्र लांछनों का उल्लेख करते हुए श्वेताम्बर एवं दिगम्बर सम्प्रदायों में एकरूपता दर्शाने का प्रयास किया है और स्पष्ट किया है कि केवल सुपार्श्व, शीतल, अनन्त एवं अरनाथ में वैभिन्नय है। लेखक द्वारा 63 शलाकापुरुषों का निरूपण एवं 17 जैन महाविद्यालयों के महत्त्व को कला में रेखांकित करना एक नयी खोज है। जैन चित्रकला पर ग्रन्थों में जैन कलाकारों के कार्यो का सामान्यत: अनुल्लेख मिलता है, किन्तु प्रस्तुत ग्रन्थ में लेखक ने जैन चित्रकला का विवरण प्रस्तुत करते हुए उसे 'जैन शैली' नाम प्रदान कर इतिहास जगत में नयी सोच का सृजन किया है। ग्रन्थ में चित्रों को आबद्ध कर विचार को समझने की दृष्टि से मूलाधार उपस्थित किया है।

योग वासिष्ठ की सात कहानियाँ

भरत झुनझुनवाला

प्रथम संस्करण : 2007

ISBN : 81-7124-548-X

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

मूल्य : 60.00

कहानियाँ बड़ी रोचक एवं तत्त्वाग्राही हैं। भाषा प्राञ्जल है। इससे पाठकों को बड़ा लाभ होगा।

—स्वामी ओमपूर्ण स्वतंत्र, चुरू

कहानियों को साधारण योग वासिष्ठ अध्येता समझ सकें—इस बात को ध्यान में रखकर उनका तात्पर्य निकालने का स्तुत्य प्रयास किया गया है।

—स्वामी प्रणवानंद, ओंकारेश्वर

रहस्यात्मक अनुभूतियों की तुलना सांसारिक जगत के सामान्य अनुभवों की अनुभूतियों के साथ करना लेखक के मौलिक चिन्तन एवं गहन दार्शनिक दृष्टिकोण का परिचायक है।

—डॉ० इंदु (पाण्डेय) खंडूडी, श्रीनगर

वेताल पचीसी

डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव

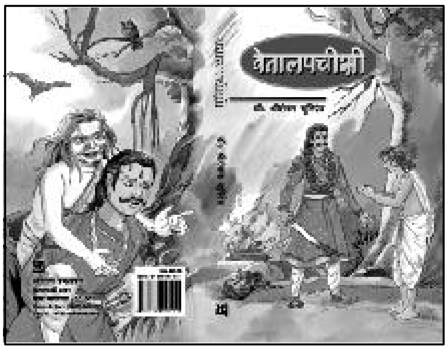

संस्करण : 2007

ISBN : 81-89498-11-8

अनुराग प्रकाशन, वाराणसी

मूल्य : 80.00

शिवदत्त, शिवदास या जम्भलदत्त लोककथा के मर्मज्ञ और विशेषज्ञ कथाकार थे। इनका दृष्टिकोण समाजशास्त्रीय रहा है। इनकी यह कथाकृति रूमानी रुझान के विद्वानों के साथ-साथ सर्वसाधारण और सुसंस्कृत व्यक्तियों को भी समान रूप से प्रभावित और आकृष्ट करती है और अपने विस्तार में सार्वभौम मूल्य आयत्त करती है। 'वेतालपचीसी' की कथाओं में मनोविनोद के तत्त्व भी समाहित हैं। ये कथाएँ केवल निषेधात्मक नहीं, वरन् प्रकृतिपरक भी हैं, साथ ही इनमें समन्वय या अन्विति, वैचारिक साहस, गहन विश्लेषण की प्रचेष्टा और दार्शनिक सूक्ष्मता भी है और फिर, एक कलाकृति के रूप में यह भारतीय सभ्यता और संस्कृति की अभिव्यक्ति की दृष्टि से एक अपूर्व और उपादेय कथा-सृष्टि है।

> कोई पुस्तक नैतिक या अनैतिक नहीं होती। यही देखना चाहिए कि वे ठीक से लिखी गई हैं या फूहड़ ढंग से। बस यही जानना काफी है।
>
> **—आस्कर वाइल्ड**

विशिष्ट पत्र-पत्रिका

संवेद (त्रैमासिक) : सम्पादक : कमलाप्रसाद मिश्र, अंक-9, सज्जाद ज़हीर विशेषांक, गणेशधाम कालोनी, नेवादा, वाराणसी

विकास सहयात्री (त्रैमासिक) : सम्पादन प्रबन्धन : गोविन्दप्रसाद शर्मा, 8/9, लालपुर सुपर मार्केट, राँची-834 001

कला समय (द्वैमासिक) : सम्पादक : विनय उपाध्याय, मंगल भवन, ई-6, महावीर नगर, अरेरा कालोनी, भोपाल-462 016

पहल 84 : सम्पादक : ज्ञानरंजन, 101 रामनगर, जबलपुर-482 004

लोक संस्कृति (मासिक) : सम्पादक : विजय दांन देथा तथा कैलाश कबीर, राजस्थानी भाषा की विशिष्ट पत्रिका, विगत दो वर्षों से प्रकाशित, प्रकाशक : रूपायन संस्थान, बोरुंदा-342 604, जोधपुर, राजस्थान।

अभिनव कदम (अर्द्धवार्षिक) : सम्पादक : जयप्रकाश धूमकेतु, 223, प्रकाश निकुंज, निजामुद्दीनपुरा, मऊनाथभंजन (मऊ) - 275 101

सेवा चेतना : (राष्ट्रचिंतन विशेषांक), सम्पादक : डॉ० गणेशदत्त सारस्वत, सरस्वतीकुंज, निराला नगर, लखनऊ-226 020

मीडिया विमर्श (त्रैमासिक) : सम्पादक : भूमिका द्विवेदी, ए-2, अनमोल फ्लैट्स, अवंति विहार कालोनी, रायपुर (छत्तीसगढ़)

अपनी जमीन (त्रैमासिक) : सम्पादक : डॉ० अभिजीत शुक्ल, 442-बी, कौआबाग, रेलवे कालोनी, गोरखपुर।

हरिगन्धा : (हरियाणा साहित्य अकादमी की मासिक पत्रिका), प्रधान सम्पादक : श्री राधेश्याम शर्मा, पंचकूला (हरियाणा)

चक्रवात (त्रैमासिक) : सम्पादक : निशांतकेतु, सुलभ इण्टरनेशनल, नई दिल्ली-110 045 द्वारा प्रकाशित श्रेष्ठ साहित्यिक पत्रिका।

समय क्षण भर रुक गया (काव्य-संग्रह)

पूनम गुजराती

9ए, मेधसर्मण-1, सिटीलाइट, सूरत

मूल्य : 80.00

समय और परिवेश से साक्षात्कार कराती इस संग्रह की कविताएँ अत्यन्त मर्मस्पर्शी हैं।

"जिन्दगी सोचने के लिए नहीं
जीने के लिए है
गाते रहो, झूमते रहो
अपना अस्तित्व मिटाकर भी
स्नेह प्रतिपल लुटाते रहो।"

विविधता से परिपूर्ण इन कविताओं में संवेदनशील हृदय प्रतिबिम्बित है।

कथन

तसलीमा नसरीन को भारतीय नागरिकता चाहिए

मैं भारत में रहना चाहती हूँ। मैंने भारत सरकार से स्थायी मान्यता के लिए अनुरोध किया है, क्योंकि भारत मुझे अपना ही देश लगता है। स्वीडन में वर्षों रहते हुए अपनी भाषा में बातचीत के लिए तरस कर रह जाती थीं। बांग्ला सुनने के लिए मुझे कोलकाता या ढाका फोन करना पड़ता था। अपने भाषा-परिवेश में रहकर लेखन पर सृजन कर्म ध्यान केन्द्रित कर सकती हूँ। मैंने अपनी आत्मकथा का पाँचवाँ खण्ड 'अमी भालो नेई, तु भी भालो थे को प्रिय देश' कोलकाता में रहते हुए लिखा। **—तसलीमा नसरीन**

किताबें झाँकती हैं / बन्द अलमारी के शीशों से / बड़ी हसरत से तकती हैं / महीनों अब मुलाकातें नहीं होतीं / जो शामें उनकी सोहबत में बीता करती थीं / अब अक्सर गुजर जाती हैं / कम्प्यूटर के परदों पर / बड़ी बेचैन रहती हैं किताबें / किताबें माँगने / गिरने, उठाने के बहाने /जो रिश्ते बनते थे / अब उनका क्या होगा...। **—गुलज़ार**

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 8 **अप्रैल 2007** **अंक : 4**

प्रधान संपादक
पुरुषोत्तमदास मोदी

संपादक : **परागकुमार मोदी**

वार्षिक शुल्क : रु० 50.00

अनुरागकुमार मोदी
द्वारा
विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
के लिए प्रकाशित
वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०
वाराणसी *द्वारा मुद्रित*

डाक रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2003 RNI No. UPHIN/2000/10104

प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत
Licenced to post without prepayment at
G.P.O. Varanasi
Licence No. LWP-VSI-01/2001

सेवा में,

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

☎ : Offi. : (0542) 2421472, 2413741, 2413082, (Resi.) 2436349, 2436498, 2311423 ● Fax : (0542) 2413082
E-mail : sales@vvpbooks.com ● Website : **www.vvpbooks.com**

विश्वविद्यालय प्रकाशन
प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता
(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)
विशालाक्षी भवन, पो० बाक्स 1149
चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN
Premier Publisher & Bookseller
(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIAN)
Vishalakshi Building, P.O.Box : 1149
Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)